तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया
दीवाना

पचंतत्र
कछुये को डिनर निमन्त्रण
यार, तुम मुझे रोज यहां अकेले घूमते नजर आते हो, क्या तुम्हारा कोई दोस्त नहीं है ?
नहीं, मेरे कोई दोस्त नहीं हैं। मैं इस दुनिया में अकेला हूं। जाने क्यों कोई जानवर मुझे दोस्त नहीं बनाता। बस यूं समझो तन्हाई ही मेरा साथी है।
मेरे भी कोई दोस्त नहीं है। आओ हम दोनों आज एक दूसरे के दोस्त बन जायें। दुनिया में दोस्त का होना बहुत जरूरी है। तुम्हें कोई एतराज तो नहीं ?
नहीं। मैं तुम्हारी दोस्ती कबूल करता हूं।
आज का तुम्हारा डिन यहां होगा, मैं अपने डिनर का प्रबन्ध करने रहा हूं। तुम मेरे दिये पर पहुंच जाना। खूब कर बातें करेंगे।
अरे ! उस कछुये को क्या हो गया ? कई महीने हो गये उसे लेकिन उसने शक्ल तक न दिखाई। उसे तो उसी दिन पहुंच जाना चाहिये था। सारा डिनर बेकार गया। अब रोज उसकी प्रतीक्षा करता हूं। क्या उसकी दोस्ती झूठी थी ? शायद झूठ मूठ ही मेरा दोस्त बना हो। लेकिन मैं अपनी दोस्ती निभाऊंगा। रोज प्रतीक्षा करूंगा। क्या तक इन्तजार भी क्यों न करना पड़े।
अब तो ज्यादा दूर नहीं रह गया अपने यार का घर। दो पहाड़ियां और तय करनी हैं। तीन चार महीने में तय कर ही लूंगा, फिर बिछुड़े दोस्त मिलेंगे और खूब गुजरेगी जब मिलेंगे दीवाने दो।
आप मेरे दादा जी की बात कर रहे हैं ? वह तो पिछले महीने गये। आखिरी सांस तक आपको पूछते रहे कि मेरा दोस्त आ नहीं। आप कहां अटक गये थे इतने साल ?
सीधा ही तो आ रहा
?
शिक्षा—दोस्ती उसी से करनी चाहिये जो साथ निभा सके। साथ
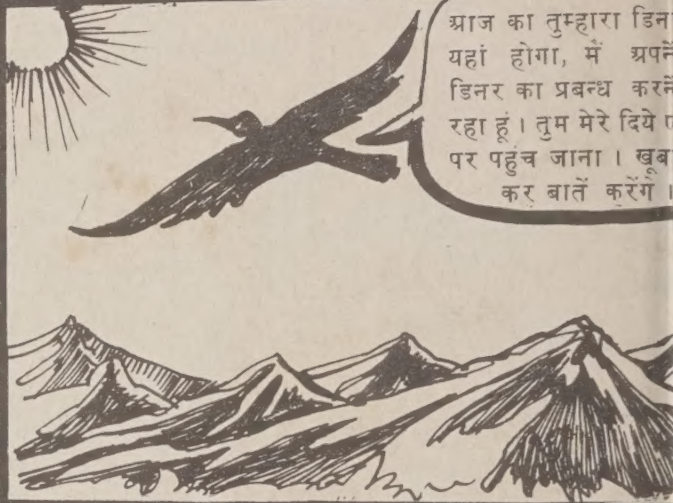
ाहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

: परिवार से सुख, सेहत नरम, लाभ
बराबर ही, यात्रा सफल, परिश्रम
क, झगड़े आदि से परेशानी, काम देर
रुक-रुक कर बनेंगे, यात्रा में सुख,
छोड़ दें।

कारोबार मध्यम, खर्चा बढ़ेगा, विशेष
मिलेगी, यात्रा हो सकती है, व्यापार
ार्थ लाभ, मित्र सहयोग से काम बन
, दोड़-धूप अधिक रहेगी, घरेलू हालात
शानी बढ़गी।

न : मनोरंजन आदि पर व्यय से कारो-
ुधरेगा, घरेलू खर्चा बढ़ेगा, आय में
सुस्ती आदि का प्रभाव, कारोबार से
अच्छा, ऋण के कामों में परेशानी
यात्रा सावधानी से करें।

अफसरों से मेल जोल, अकारण वैर-
से परेशानी, कामों में अड़चन, लाभ
अफसरों की ओर से परेशानी, अन्य
सुधरेंगे, शत्रु पर विजय, व्यापार से
लाभ होगा।

स्वभाव में गुस्सा अकारण ही, लाभ
पर मिलेगा देर से, अधूरा काम बन
व्यापार में सुधार, परिश्रम सफल,
ादि से परेशानी, अफसरों के मेल से
ोगा।

: व्यय यथार्थ, धार्मिक कामों में रुचि
रवार से सुख, आर्थिक परेशानी दूर
बिगड़े काम बनते नजर आयेंगे,
में उन्नति, संघर्ष भी काफी करना
लाभ भी काफी होगा।

शारीरक कष्ट या सुस्ती छाई रहेगी।
ण सुधरेगा, परिश्रम करने पर सफ-
सीब होगी, काम बन जायेंगे, आम-
च्छी, व्यय भी बढ़ेगा, यात्रा सफल,
अधिक, अधूरा काम बनेगा।

: दिन ठीक नहीं सावधानी से रहें,
र बढ़ेगा और यात्रा भी लाभप्रद
हालात सुधरेंगे, यात्रा में कष्ट या
फसरों के मेल से लाभ, काम बन

ामकाज का बोझ काफी रहेगा,
ुधरेंगे, आय यथार्थ, यात्रा में सुख,
कामों में रुचि एवं व्यय, अजनबी
बचें, यात्रा की आशा है, चोट
भय है।

मनोरंजन आदि में समय अच्छा
संघर्ष आयेंगे, व्यर्थ की चिन्ता बनी
आय उत्तम, कामकाज का बोझ
हसूस होगा, धर्म-कर्म में रुचि, सेहत
।

यात्रा छोड़ दें, कारोबार की स्थिति
, यात्रा सफल, व्यय कुछ अधिक
ामदनी अच्छी पर मिलेगी देर से,
बन्धी कामों में परेशानी, नई वस्तुओं
द पर व्यय होगा।

सुस्ती का प्रभाव रहेगा, आय-व्यय
कारोबार ठीक चलने लगेगा, शुभ-
मिश्रितफल मिलेंगे, दौड़धूप अधिक,
ाम बनते दिखाई देंगे, स्वभाव में
ोगा।

आपके पत्र

दीवाना का अंक ३३ मिला, उसे पढ़ते-पढ़ते मैं भी दीवाना हो गया। 'काका के कारतूस', 'मोटू-पतलू', 'सिलबिल-पिलपिल' बहुत ही अच्छे लगे लेकिन इस अंक में 'खेल-खेल में' नहीं था। यह देख कर बहुत अफसोस हुआ। वास्तव में अन्य पत्रिकाओं को देखते हुए यह एक श्रेष्ठ पत्रिका है। मेरी यही कामना है कि यह पत्रिका दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़े। **सुरेश तिवारी—आगरा**

दीवाना का अंक ३३ मिला, काका हाथरसी का लिखा आधुनिक योगासन और फूल गिरे है गुलशन-गुलशन, मोटू-पतलू व सिलबिल-पिलपिल पढ़कर इतना मजा आया कि पूछो नहीं।

श्रीपाल एन० मोदगिल—लुधियाना

आपका दीवाना साप्ताहिक २३ अक्तूबर का अंक प्राप्त हुआ। इसमें सभी कहानी, सवाल जबाब अच्छे ढंग से छापे हैं, मुझे बेहद पसंद है। फ्रेन्डस क्लब के फोटो भी बेहद पसंद हैं। अनहोनी, सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, सरकारी कार्टून भी सुन्दर छपे हुए हैं। सारा अंक बेहद पसंद आया।

किरण सुरेश—बांद्रा बम्बई

काफी दिनों के इंतजार के बाद दीवाना का अंक ३३ प्राप्त हुआ। दीवाना के मिलते ही दिल मचल उठा। मुख पृष्ठ को देखकर हंसते-हंसते बेहाल हो गया।

काका के कारतूस, मोटू-पतलू, सिलबिल पिलपिल, परोपकारी जैसे स्थायी स्तंभ पसंद आए। फूल गिरे हैं गुलशन-गुलशन ने विशेष रूप से प्रभावित किया।

यदि मैं कुछ रोचक लतीफे भेजूं, तो क्या आप उन्हें मेरे नाम के साथ दीवाना में प्रकाशित करेंगे।

उमेश ज्ञान चंदानी प्रेमी—बिलासपुर

जी हां, आप जो लतीफे भेजेंगे वे आपके नाम के साथ ही प्रकाशित किये जायेंगे। —सं०

दीवाना अंक नं ३३ चौबीस दिन लेट मिला। यह अंक भी काफी जोरदार रहा। मोटू पतलू, फूल गिरे है गुलशन गुलशन, उससे मेरा क्या वास्ता कहानी तथा सवाल यह है ? मुझे बेहद रोचक लगे।

सत्यपाल 'कुकु'—कतरासगढ़

अंक ३३ वैसे देर आया दुरुस्त आया। फूल गिरे हैं गुलशन-गुलशन, सुपर मैन सिल-बिल पिलपिल विशेष रूप से पसंद आये।स्थायी स्तंभ परोपकारी जी और बात-बे-बात की भी पसंद आये वास्तव में धारावाहिक उपन्यास दीवाना पत्रिका के लिए नहीं है, पूरा खत्म होने के बाद बंद कर दें। डा० राम सियासिंह की कहानी उससे मेरा क्या वास्ता अच्छी लगी।कुल मिलाकर दीवाना रुचिकर रहा और मैं इसकी विश्व ख्याति की कामना करता हूं।

इस पत्र का विशेष कारण ये भी है कि आप पेन फ्रेन्ड क्लब में सिर्फ पुरुषों की ही फोटो क्यों छापते हैं ? स्त्री एवं लड़कियों को प्रोत्साहन देने की ओर ध्यान दें।

एस. एम. वसीम—लखनऊ

पहले हम लड़कियों के फोटो भी छापते थे लेकिन बहुत-सी लड़कियों के माता-पिता ने इस पर आपत्ति प्रकट की तो हमने ऐसा करना बन्द कर दिया। —सं०

मैने आपका तेज साप्ताहिक दीवाना पढ़ा। पढ़कर दिल खुशी से झूम उठा। काका के कारतूस और जूडो-कैराटे कैसे सीखें, लेख माला बहुत ही पसन्द आये। तर्क-कुतर्क ने तो हंसा-हंसा कर पेट दुखा दिया हर बार की तरह 'मोटू-पतलू' भी अपने नए रंगों में झलकते हुए दिखाई दिए। इस तरह इस अंक के सभी स्तम्भ पहले की तरह काफी रुचिपूर्ण थे। कृपया आप गरीब चन्द्र की डाक, आपस की बातें, रंग भरो इत्यादि में कूपन देना बन्द कर दो तो शायद ज्यादा अच्छा रहेगा। क्योंकि कूपन काटने से दीवाना खराब हो जाती है तथा पीछे छपी कहानी तथा लेख इत्यादि कट जाते हैं। आशा रखता हूं कि आप इस ओर अवश्य ध्यान देंगे।

अनिल कुमार रोहतास—हरियाणा

मुख पृष्ठ पर

लम्बी दाढ़ी राखिये
गुण इसके हजार
ऐसे पिल्ला बांधिये
जब जाओ बाजार।
जब जाओ बाजार
न खोने का चक्कर
देखेगा वो सामने
कभी न होगी टक्कर॥

अंक : ३५ वर्ष : १५
१५ दिसम्बर १९७९

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें वार्षिकः ४८ रु०
छमाहीः २५ रु० द्विवार्षिकः ९५ रु०

परोपकारी
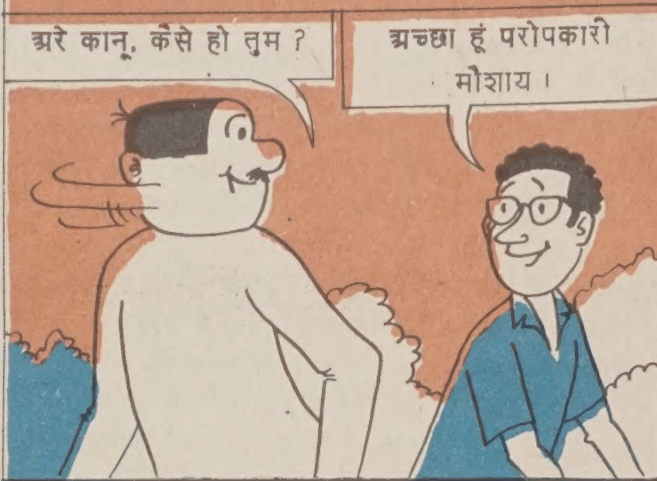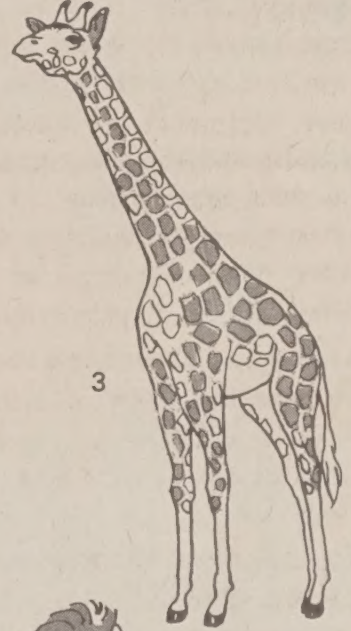
हां भई आखिर शादी भी तो मैंने ही करवाई थी। बीना है ही ऐसी कि उसके साथ सब खुश ही रहते हैं, कभी लड़ती झगड़ती नहीं ...

नहीं ऐसी बात नहीं, लड़ती तो है वो.....

बात-बे-बात की

प्रकाश रुसिया, दुर्ग (म० प्र०)
प्र० : कुछ लड़के, लड़कियों को देखकर मुस्कराने क्यों लगते हैं ?
उ० : तुम इसका उल्टा करो, क्यों हो रहे हताश,
फूट-फूट रोइए, होय हास्य का नाश।

चन्द्रभान 'अनाड़ी', जबलपुर
प्र० : 'बाई दी दे' आपकी मुलाकात खुदा से हो जाय तो ?
उ० : इन्दिरा गांधी, चरणसिंह या जगजीवन राम,
इन्हें छोड़, कुर्सी हमें दे दीजे भगवान।

हरगुन जसवानी, मंडला (म० प्र०)
प्र० : युवकों को मां का सहारा आवश्यक है या बाप का ?
उ० : रंग जाएँ जब कुँवर जी, न्यू लाइट के रंग,
लात मार मां-बाप में, लगें प्रेमिका संग।

पवन खत्री बैरागी, इन्दौर
प्र० : प्यार में आबादी है या बरबादी, उत्तर दो काकाजी ?
उ० : बैरागी भी रागी बनकर कर लेते हैं जब शादी,
बढ़ने लगती आबादी, तब होने लगती बरबादी।

एम० ए० बसन्त, मानगो, जमशेदपुर
प्र० : काका, आप भी अपनी पत्नी से काकी कहते हैं क्या ?
उ० : तनिक हेर-फेर से कहते ओ मेरे मुन्ने की काकी,
कविता नई लिखी है हमने, सुनो छोड़कर चूल्हा चाकी।

अशफाक अहमद 'भैया', इन्दौर
प्र० : इन्सान को अपनी गलती का अहसास कब होता है ?
उ० : भैया, कुछ दिन ठहरिए, जब हो जायें चुनाव,
'चरण पार्टी' से मिले इसका तुम्हें जवाब।

अमित अग्रवाल देवली
प्र० : परीक्षा नजदीक आ रही है, लेकिन पढ़ाई नहीं हो पाती ?
उ० : मौज मजे के रूम को, कर दो कुछ दिन 'लौक',
फिल्मी आदत छोड़कर, डालो इल्मी शौक।

देवकी नन्दन शर्मा, इलाहाबाद
प्र० : मिलें नैन से नैन तो, बन जाते हैं फैन
दोष आंख का है मगर, दिल क्यों हो बेचैन ?
उ० : जिन आंखों में शूल थे, दिल ने समझे फूल,
सजा उसी को मिलेगी, जिसने की यह भूल।

मनोज कुमार भारद्वाज, मुरादाबाद
प्र० : हम अश्क बहाते आए थे, फिर अश्क बहाकर चले गये,
तुमने मुस्का कर टाल दिया, हम गम को खाकर चले गये।
उ० : जो अश्क बहाते आते हैं, वे अश्क बहाते जाते हैं,
जो हंसते गाते आते हैं, वे हंसते गाते जाते हैं।

काशीनाथ कपूर, बाबागंज (इलाहाबाद)
प्र० : काकाजी, आप मध्यावधि चुनावों में खड़े क्यों नहीं हुए ?
उ० : आज एम० पी० से अधिक, मान प्रशंसा पायें,
घुसकर के सरकार में क्यों हम गाली खायें।

योगेश मेहता, लश्कर (ग्वालियर)
प्र० : इंसान का घमंड कब चूर-चूर हो जाता है ?
उ० : खुद को रावण समझकर हो जाता जब क्रूर,
फूटे घड़ा घमंड का, होता चकना चूर।

रोशन व्यास त्यागी, इन्दौर
प्र० : काकाजी, जनता सरकार का कौन सा कार्य आपको भाया ?
उ० : जनता पार्टी धन्य है, जन हित से मुख मोड़,
आयोगों मे कर दिया, खर्चा कई करोड़।

केवल प्रकाश, काशीपुर (नैनीताल)
प्र० : क्या आप भी अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होते हैं ?
उ० : कथा, कीर्तन, भजन से हों प्रसन्न भगवान,
हम जैसे खुश क्यों न हों, साधारण इंसान।

अशोक मुकीम, रायपुर (म० प्र०)
प्र० : मुझे बोलने की आदत अधिक है, इसे कम करने का उपाय ?
उ० : एक रोज सप्ताह में, दिन भर रखिए मौन,
उस दिन अपनी जीभ का, स्विच मत करिए औन।

बलराज फब्यानी, कांकेर (बस्तर)
प्र० : कविता करते रहते आप, कब करते काकी का जाप ?
उ० : काकी आती सामने, होकर के टिपटाप,
बन जाती, बिन बनाए, कविता अपने आप।

रमेश पसारी, बोकाखात (शिवसागर)
प्र० : आपकी और काकी जी की सबसे प्रिय चीज क्या है ?
उ० : भिन्न-भिन्न हैं आस्था, अलग-अलग आनन्द,
उनको बेलन-चिमटा, हमको कलम पसन्द।

योगेश कुमार अग्रवाल, डीमापुर (नागालैंड)
प्र० : गीदड़ की मौत आती है तो गांव की ओर भागता है, नेता की मौत आती है तो ?
उ० : कूटनीति की चाल से, झूठ-फूठ फैलाय,
संगी साथी छोड़कर, पार्टी नई बनाय।

रणवीर सिंह राणा, श्री करणपुर (राजस्थान)
प्र० : न काली घटा है, न पीने का मौसम,
मगर पीने वाले पिये जा रहे हैं।
उ० : न तो पीने का सलीका, न पिलाने का है शऊर,
ऐसे भी लोग चले आये हैं मयखाने में।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२
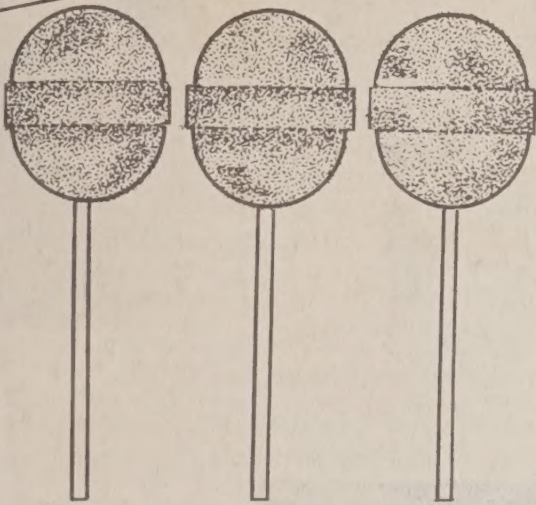
मोटू पतलू

भांति-भांति के नेता आज बरसाती मेंढ़कों की तरह टर्रा रहे हैं। उनके पेटों में देश सेवा का ऐसा मरोड़ है कि हर नेता करवटें बदल-बदलकर हाय-हाय कर रहा है। चुनाव के इस शोर-शराबे में भला यह कैसे सम्भव था कि मोटू-पतलू एंड कम्पनी इसमें हिस्सा न ले। उन्होंने सभी विचारधारा के लोगों को एक झंडे तले लाने के लिये एक अलग पार्टी बना ली है और उस पार्टी का नाम रखा है, 'जनता आर० एस० एस० सोशलिस्ट कांग्रेस दल।' लंगर-लंगोटे कस कर यह पार्टी बड़े दमखम से चुनाव दंगल में कूदी है। इस पार्टी की उछल-कूद का आंखों देखा हाल अब आगे प्रस्तुत है।
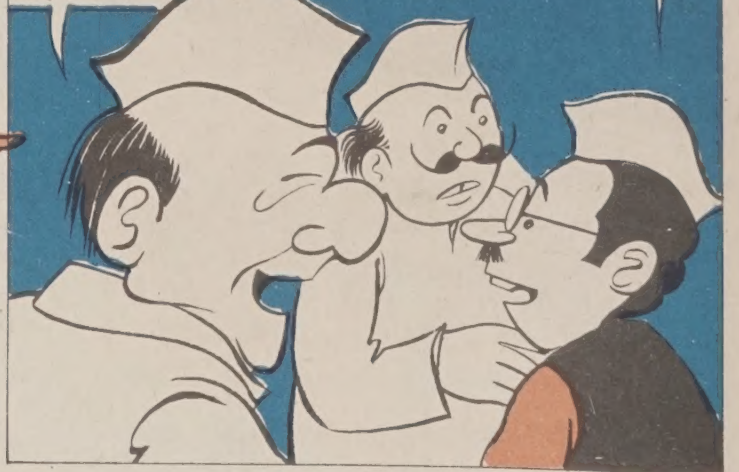
यह जूडो मास्टर और उल्लू उस्ताद तो पहले ही मेरे साथ हैं, तुम भी मेरी PWD में आ जाओ चेला राम, मैं चुनाव के बाद तुम्हें उप-प्रधान मंत्री बनाने का वादा करता हूं ।
मंजूर है । पर इतना याद रहे कि चुनाव में जरा हेरा फेरी की तो तुम्हारा PWD ग्रुप LBW आउट हो जाएगा ।

देखते ही देखते एक पार्टी, दो पार्टियों में बंट गई । चुनाव कमीशन ने दोनों को चुनाव चिन्ह एलाट कर दिये और चुनाव के दिन पास आने लगे तो दोनों का प्रापेगंडा तेज होता गया ।
मोटू को वोट दो
हल्का सब्जी मंडी से PWD के उम्मीदवार घसीटा राम को वोट देकर कामयाब बनायें ।
PWD का चुनाव चिन्ह
"बैंगन" याद रखें ।

हल्का सब्जी मंडी से लोकप्रिय उम्मीदवार मोटू को वोट देकर सफल बनायें । जनता आर०एस० एस० सोशलिस्टकांग्रेस दल के चुनाव चिन्ह लोटे पर मोहर लगायें ।

मोटू को वोट दो
लोटे पर मोहर लगाओ
भाईयों लोटा हमारी प्राचीन सभ्यता की अनमोल निशानी है ।

लोटा हमारे धार्मिक स्थानों पर पूजा जाने वाला कलश है । लोटा हमारे फलते-फूलते सम्पन्न भारत का प्रतीक है।लोटे को वोट देना अपने देश और धर्म की रक्षा करना है ।

भाइयों । प्यारे सज्जनों, इन लोटे वालों के चक्कर में मत आना । बे-पैंदे के लोटे की कहावत बहुत पहले से प्रसिद्ध है । यह कब किधर लुढ़क जायेगा यह कोई नहीं जानता । प्यारे भाईयों ! बैंगन को वोट दो। इसकी चमक भारत के उज्ज्वल भविष्य की प्रतीक है । बैंगन गोल हैं और आपकी मुट्ठी में है । ऐसे ही दुनिया गोल है और एक दिन आपकी मुट्ठी में होगी ।
घसीटा राम को वोट दो
बैंगन पर मोहर लगाओ
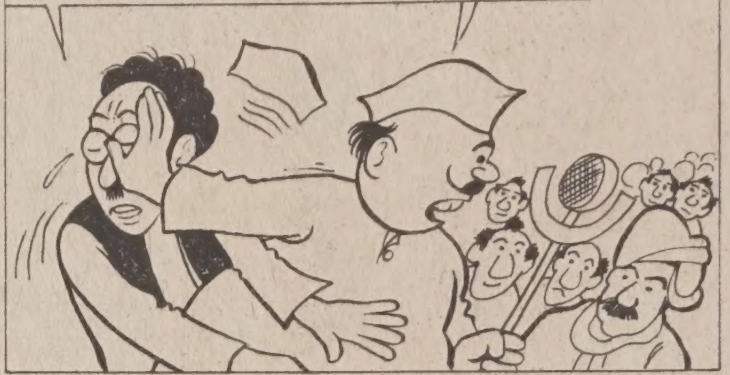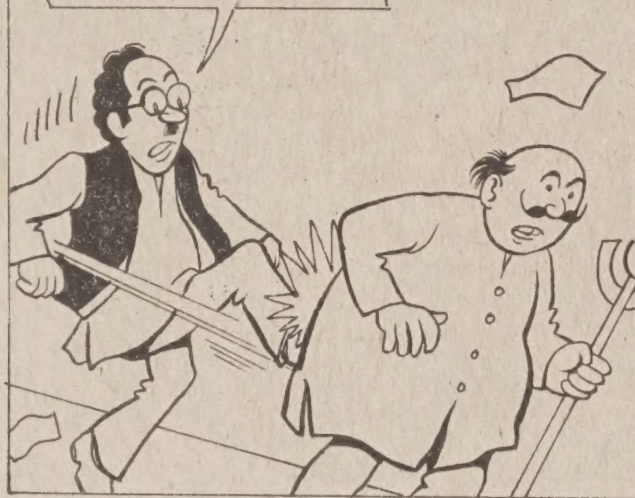
कहते हैं शक्कर खोरे को शक्कर और मूजी को टक्कर मिल ही जाती है। घसीटा राम के सामने अब सबसे बड़ी समस्या यह थी कि मोटू-पतलू के चुनाव जलसे फेल कराने के लिए क्या किया जाए। इसके लिए घसीटा राम को कुछ ऐसे लोग मिल गये जिन्होंने चुनाव के हंगामों में रुपया कमाने के लिए एक जलसा बिगाड़ू कम्पनी बना ली थी।

बहुत सस्ते दामों पर आप हमसे हर प्रकार की सुविधायें प्राप्त कर सकते हैं।
किसी भी चुनाव सभा का भट्टा बिठाने के लिए नगर का एक से एक गुंडा और दस नम्बरिया हमारे साथ है।
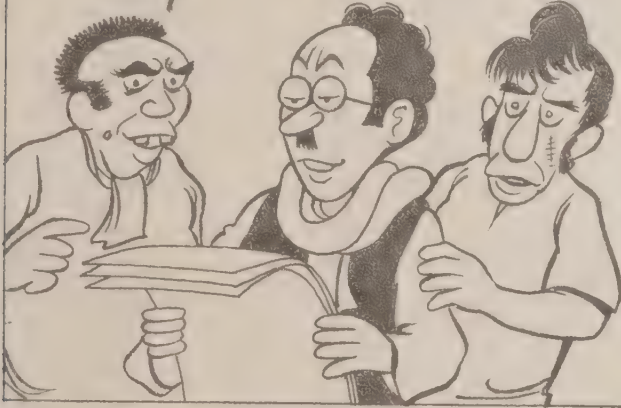
यह रेट लिस्ट है आपके जलसे के लिये।
तालियां बजाने वाले······३६ रुपये दर्जन।
"देश का नेता" कह कर नारे लगाने वाले ···४२ रुपये दर्जन।
फूल बरसाने वाले·· ····६० रुपये दर्जन;
गले में हार डालने वाले ···७२ रुपये दर्जन।
चुनाव सभा में गड़बड़ कराने के लिये कृपया दूसरी लिस्ट देखें
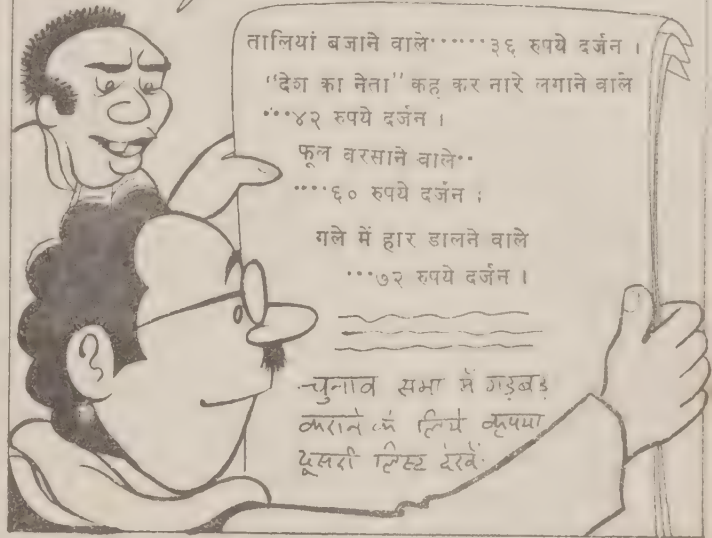
और यह दूसरी रेट लिस्ट है अपने विरोधी की चुनाव सभा भंग करवाने के लिये।
मुर्दाबाद के नारे लगाने वाले ···३० रुपये दर्जन।
हूटिंग करने वाले ···३६ रुपये दर्जन।
हाय-हाय करने वाले·· ····६० रुपये दर्जन।
पथराव करने वाले·· ····१२० रुपये दर्जन।
छाती पीट कर स्यापा करने वाले ······८४ रुपये दर्जन।
काली झंडियां दिखाने वाले ···४८ रुपये दर्जन।
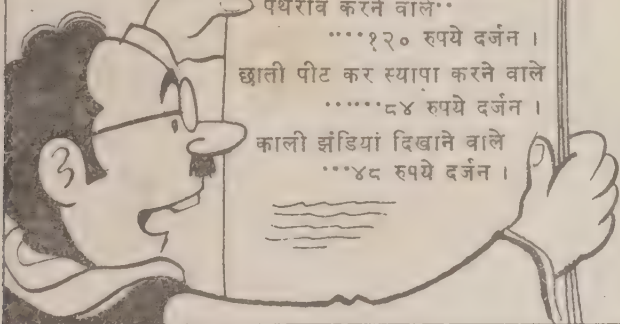
सड़े टिमाटर और अंडों के छिलके फेंकने वाले···१४४ रुपये दर्जन।
खाली डिब्बे और टूटे जूते फेंकने वाले···१६८ रुपये दर्जन।
नेताओं के कपड़े फाड़ने वाले··· १५६ रुपये दर्जन।
चुनाव मैंच के नीचे बम रखने वाला स्पेशल आदमी ८०० रुपये का एक।
विरोधी नेता का अपहरण करने वाले चार आदमी ८०० रुपये।
अपहरण किये नेता की आंखों में मिर्चें डालने वाले···२०० रुपये के दो।
अपहरण नेता को कूंए में धक्का देने वाले
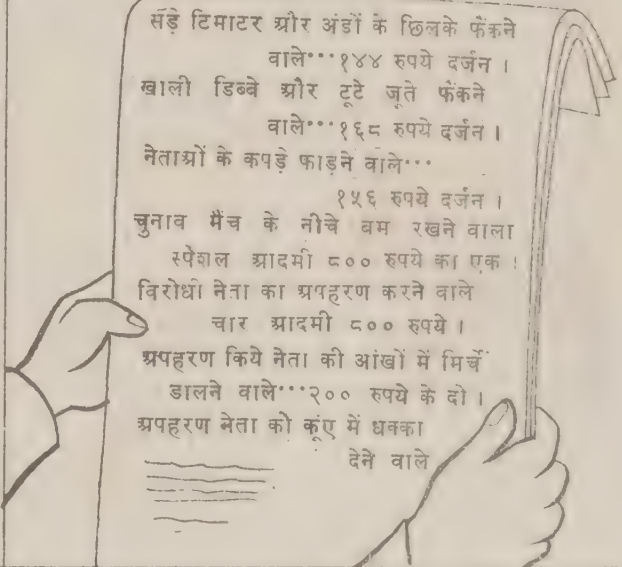
वाह-वाह क्या फन्ने खां आदमी हैं तुम्हारे पास।
और हमारे रेट भी बहुत कम हैं।

पहली रेटलिस्ट के आदमी तो मुझे अपने जलसे के लिए चाहियें। मेरे गले में फूलों के हार डालने वाले। "देश का नेता घसीटा राम" के नारे लगाने वाले। तालियां बजाने वाले और फूल बरसाने वाले। यह सब तीन-तीन दर्जन आदमी चाहियें मुझे।
मैंने नोट कर लिया है आप का आर्डर।
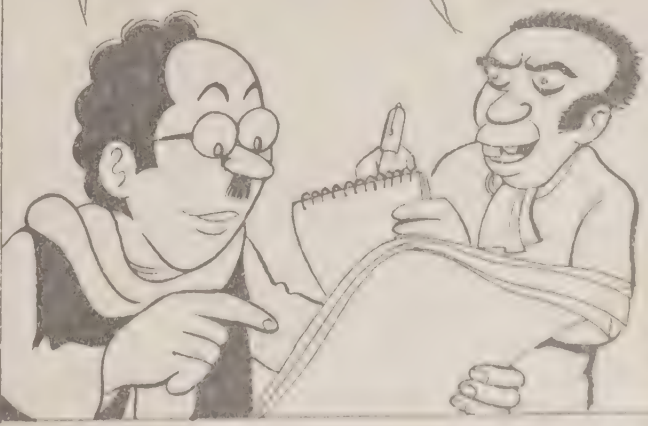
ग्रौर यह मुर्दाबाद कहने वाले, हूटिंग करने वाले, छाती पीटने वाले पथराव करने वाले ग्रौर अंडे ग्रौर टिमाटर फेंकने वाले मोटू-पतलू की चुनाव सभाओं के लिए चाहियें।
एक से एक छटा हुग्रा गुंडा सप्लाई करेंगे हम। चुनाव सभाओं का भट्टा न बिठा दें तो हमारा नाम नहीं।

यह क्या लिखा है तुमने ? क्या तुम मेरे विरोधी को चुनाव सभा में मंच के नीचे बम रख कर उसे बारुद से उड़ा सकते हो ?
एक धमाके में पूरे मंच का सफाया कर सकते हैं।

इसके बाद तुम जनता ग्रार. एस. एस. सोशलिस्ट कांग्रेस दल के सबसे बड़े नेता मोटू का ग्रपहरण कर सकते हो।
बिलकुल कर सकते हैं ग्रौर तुम कहो तो उसकी ऐसी दुर्गत बना सकते हैं कि उसकी सात पुश्तें चुनाव में खड़ा होने का नाम न लें। तुम जितने पैसे दोगे हम उसका उतना ही कबाड़ा कर देंगे।
इस काम के तो मैं तुम्हें मुंह मांगे पैसे दूंगा।

सौदा तय हुग्रा तो घसीटा राम ने उन्हें रकम थमा दी।
तुम्हारा काम बढ़िया रहा तो तुम्हें ग्रौर इनाम भी दूंगा।
ऐसा बढ़िया काम होगा कि ग्राप की तबीयत खुश हो जायेगी।
ग्राज शाम को उसकी ग्रौर हमारी चुनाव सभायें साथ-साथ हो रही हैं। उनकी लिस्ट के आदमी उनकी सभा में भेज देना ग्रौर मेरी जय-जयकार करने वाले मेरी सभा में भेज देना।

रास्ते में दोनों लिस्टें उनके हाथ से फिसल गईं।
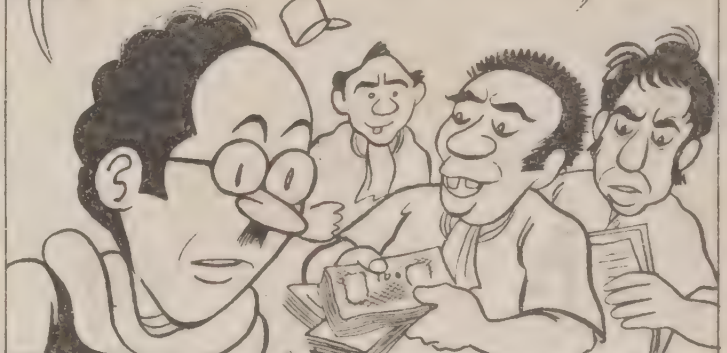
लिस्टें दोबारा उठाईं तो ग्रब यह हिसाब लगाना मुश्किल था कि कौन सी लिस्ट किस जलसे के लिये है वे घसीटाराम से यह पूछना भी भूल गये थे कि उसका जलसा कहां होगा और उसके विरोधियों का जलसा कहां होगा।
जलसों का स्थान घसीटाराम से फोन पर पूछ लेंगे।

निर्धारित समय पर जलसा बिगाड़ू कम्पनी के गुंडे वहां पहुंच गये, जहाँ घसीटाराम और मोटू-पतलू के अलग-अलग जलसे होने वाले थे। मोटू-पतलू के स्टेज के पास खड़ा घसीटा राम उस समय मोटू को आखरी चेतावनी दे रहा था।

थोड़ी ही देर बाद मोटू ने अपनी तकरीर शुरू की।

तभी चारों ओर से फूलों की वर्षा शुरू हो गई।

जनता में से कुछ लोग स्टेज की ओर भागे और उन्होंने मोटू को फूलों के हारों से लादना शुरू कर दिया। मोटू को और उसके साथियों को समझ में नहीं आ रहा था कि उनके इतने प्रशंसक कहां से आ गये।

जिन्दाबाद और अमर रहे के नारे वहां तक पहुंच रहे थे जहां घसीटा राम स्टेज पर खड़ा भाषण देने के लिये तैयार था।
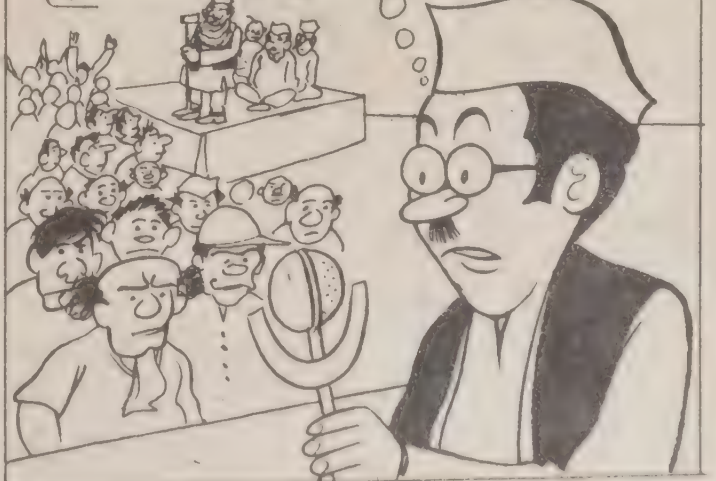
भाइयों मुझे आज आप से कुछ जरूरी बातें कहनी हैं
यूं कहो कि फजूल बकवास करनी है।
आज देश संकट में फंसा है।
और देश का और बेड़ागर्क करना चाहते हो।
क्या हो गया है इन लोगों को।

हमें गरीबी को देश से उखाड़ कर फेंकना है।
तुम्हें धरती में गाड़ दिया जाय तो गरीबी अपने आप उखड़ जायेगी।
आज मँहगाई के कारण हर आदमी हाय! हाय! कर रहा है।
तुम से हम अब हाय! हाय! करवा देंगे।

घसीटा राम ने अब कुछ और बोलना चाहा तो एक सड़े हुए अंडे ने उसका कबाड़ा कर दिया।

और दूसरे ही पल उस पर सड़े टिमाटरों। अंडों, टूटे जूतों, चप्पलों और खाली डिब्बों की बारिश शुरू हो गई।
नकली नेता हाय! हाय! मतलबी नेता हाय! हाय!
जिसे निकम्मा पायेंगे, धूल में उसे मिलायेंगे।

जो भूखों को न दे रोटी, उसकी नोचो बोटी बोटी।
जो मेंढक सा टर्र-टर्र करता, उसका फाड़ो धोती कुर्ता।
मुर्दाबाद, मुर्दाबाद जीते जी तुम मुर्दाबाद।
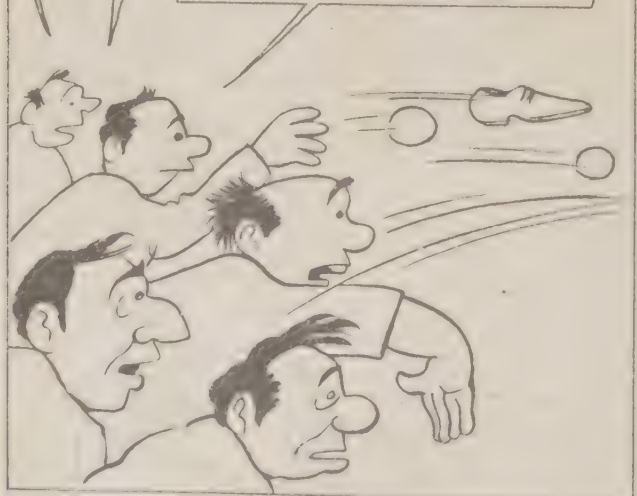
दूसरी ओर अब घसीटाराम के स्टेज के नीचे रखे बम को माचिस दिखाई गयी थी।

आगामी अंक में इन से फिर मिलिये।

सुनील गावस्कर के प्रथम श्रेणी शतक

वर्तमान भारत-इंगलेंड टैस्ट सीरीज में सुनील गावस्कर ने जब गलासेस्टर शायर के विरुद्ध ११६ रन बनाये तो उनके जीवन की एक ग्रौर महत्वपूर्ण मंज़िल ग्रा गयी। इसके साथ ही सुनील के प्रथम श्रेणी के मैचों में शतकों का ग्रर्धशतक पूरा हुग्रा यानि पचास शतक पूरे हुए। पचास में से १६ टैस्ट शतक हैं ग्रौर ३१ प्रथम श्रेणी मैचों के।

प्रथम श्रेणी शतकों का शुभारम्भ १९६९-७० सीजन में गवास्कर ने शुरू किया जब उन्होंने रणजी ट्राफी फाइनल में राजस्थान के विरुद्ध ११४ रन बनाए। उसके पश्चात ११वें वर्ष में वह शतक के ग्रर्धशतक तक ग्रा पहुंचे हैं। ग्रब उनका लक्ष्य प्रथम श्रेणी शताब्दी के विजय हजारे के ५७ शतकों के भारतीय कीर्तिमान को लांघना है। वह दिन भी शायद ग्राये जब सुनील गावस्कर शतकों का शतक पूरा करें।

उनके शतकों में १९ टैस्ट शतक, १ श्रीलंका के विरुद्ध ग्रन ग्राफीसियल टैस्ट में, १४ रनजी ट्राफी मैचों में, ४ दुलीप ट्राफी में, २ ईरानी कप में, ७ इंगलेंड में ग्रौर एक एक शतक वेस्टइंडीज, श्रीलंका व पाकिस्तान के दौरों पर बने हैं।

गावस्कर का कीर्तिमान

२० सितम्बर १९७९ मद्रास टैस्ट में जब सुनील गावस्कर ने दस रन बनाये तो वह टस्टों में ५००० रनों की संख्या पार करने वाले विश्व के गिने चुने खिलाड़ियों में शुमार हो गये।

गावस्कर के ५००० टैस्ट रनों की मात्रा का विवरण —

वैस्टइंडीज, १६ टैस्टों, में २,००४, ग्रौसत ८३.५० (दस शतक)।

इग्लैण्ड, २० टैस्टों, में १,५२१, ग्रौसत ४०.०९ (३ शतक)।

ग्रास्ट्रेलिया, ७ टैस्टों में ५१०, ग्रौसत ४६.३६ (३ शतक)।

न्यूजीलैंड, ६ टैस्टों में ५२५, ग्रौसत ५२.५ (२ शतक)।

पाकिस्तान, ३ टैस्टों में ४४७, ग्रौसत ८९.४ (२ शतक)।

योग ५२ टैस्टों ५,००७ रन ग्रौसत ५६.८९ (२० शतक)।

५००० से ग्रधिक रन बनाने वाले ग्रौर टैस्ट खिलाड़ियों की सूची—

इग्लैण्ड : बोयकोट ६३१० रन ८४ टैस्ट में, कौड्रेय ७६२४ रन ११४ टैस्टों में, हाम्मोंड ७२४९ रन ८५ में, लेन हुत्तन ६९७१ रन ७९ में, बारिंगटन ६८०६ रन ८४ में, कोमप्टन ५८०७ रन ७८ में, जैक होबस ५४१० रन ६१ में, जोहन एडरिच ५१३८ रन ७७ में।

ग्रास्ट्रेलिया : डोन ब्रेडमैन ५२ टैस्टों में ६९९६, नील हार्वे ७९ टैस्टों में ६२४९, इयान चप्पिल ७२ टैस्टों में ५१८७, बिल लौरी ६६ टैस्टों में ५२३४।

वैस्टइन्डीज : सोबरस ८०६२ रन ९३ टैस्टों में कन्हारी ६२२७ रन ७९ टैस्टों में।

टैस्ट क्रिकेट में १०० विकेटें ग्रौर १००० रन

विश्व टैस्ट इतिहास में एक ही खिलाड़ी द्वारा १०० विकेटें लेने तथा १००० रन सबसे कम टैस्टों में बनाने का रिकार्ड भारत के वीनू मांकड़ का था। ओवल टैस्ट में इग्लेंड के इयान बोथम ने यह रिकार्ड तोड़ दिया—विश्व के विभिन्न देशों के द्वारा १०० विकेट तथा १००० रन बनाने वाले खिलाड़ियों के करतब के ग्रांकड़ों का ब्योरा।

खिलाड़ो	देश	दोहरा कीर्तिमान	रनों की संख्या का योग	लिए हुए विकेटों का योग	खेले हुए टैस्ट का योग
इयान बोथम	(इग्लैण्ड)	२१	१०३५	१०७	२१
वीनू मांकड़	(भारत)	२३	२१०९	१६२	४४
मन्टी नोबल	(ग्रास्ट्रेलिया)	२७	१९९७	१२१	४२
जोर्ज गिफ्फन	(ग्रास्ट्रेलिया)	३०	१२३८	१०३	३१
रिची बेर्नाड	(ग्रास्ट्रेलिया)	३२	२२०१	२४८	६३
कीथ मिलर	(ग्रास्ट्रेलिया)	३३	२९५८	१७०	५५
मुराइस टेट	(इग्लैण्ड)	३३	११९८	१५५	३९
एलान डेविडसन	(ग्रास्ट्रेलिया)	३४	१३२८	१८६	४४
ट्रेवर गोडार्ड	(साउथ ग्रमेरिका)	३६	२५१६	१२१	४१
टोनी ग्रेग	(इग्लैण्ड)	३७	३५९९	१४१	५८
रे लिनवाल	(ग्रास्ट्रेलिया)	३८	१५०२	२२८	६१
फ्रेड टिटमस	(इग्लैण्ड)	४०	१४४९	१५३	५३
इन्तखाब ग्रालम	(पाकिस्तान)	४१	१४९३	१२५	४७
वैलफ्रेड रोडस	(इग्लैण्ड)	४४	२३२५	१२७	५८
इयान जोनसन	(ग्रास्ट्रेलिया)	४५	१०००	१०९	४५
ट्रेवर बैली	(इग्लैण्ड)	४७	२२९०	१३२	६१
रे लिंगवर्थ	(इग्लैण्ड)	४७	१८३६	१२२	६१
गौरी सोबर्स	(वैस्टइन्डीज)	४८	८०३२	२३५	९३

तीसमारखां

पिता के क्रिकेट कमेंटेटर होने का यही तो नुकसान है। जब मां किचन में होती है ग्रौर हम भाई-बहन लड़ते हैं तो डैडी बीच वाले दरवाजे पर खड़े होकर मां को हमारी लड़ाई का ग्रांखों देखा हाल सुनाते हैं।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

उस होनहार इंजिनियर से धनराज इतना खुश हुए कि उसके मनोरंजन के लिए उन्होंने एक बोलती गुड़िया मंगवा दी। मगर वह गुड़िया बहुत तेज़ थी। उसने आते ही इंजिनियर का इंटरव्यु लेना शुरू कर दिया।

क्या इस बस्ती के सारे लोग तुम्हारी तरह खर-दिमाग और पत्थर दिल है?

सब तो नहीं सिर्फ धनराज जी का दिल पत्थर का है और वह भी शुध्द काले पत्थर का। हां, मगर एक ऐसा भी है जिसका दिल हीरा है, हीरा! उसका दिल हाथों में और दिमाग घुटनों में रहता है।

उस काले अफ़सर को परखने के लिए कहीं से एक बदमाश। जौहरी वहां आन धमका।
हम खानदानी जौहरी हैं! बहुत से जौहर हममें कूट कूट के भरे हैं। हम उस नकली हीरे को देखते ही पहचान लेंगे कि वह असली है या नकली!
हाय मर जावां मेरे जौहरी। उस काले अफ़सर को देखकर तो कोई बच्चा भी बता देगा कि वह असलची है या नकलची।

काला अफसर जब यह सुनता है कि कोई जौहरी उसे परखने आया है तो वह डाक्टरनी बाई के पास दौड़ा चला जाता है।
मेरा दिमाग तो पत्थर का है लेकिन दिल बडा नाजुक है! वह कांच का बना हुआ है! मुझे बड़ा डर लग रहा है! कोई ताकत की दवा हो तो दीजिए।

डाक्टरनी बाई हर मर्ज़ का इलाज जानती थी।
मेरे पास तेरा भी इलाज है। तेरा दिल कमजोर है तो क्या हुआ मेरा दिल तो पत्थर से भी ज़्यादा सख्त है। तू ऐसा कर चूड़ियां पहन कर यहां बैठ और मैं तेरे शत्रु से लड़ने जाती हूं!
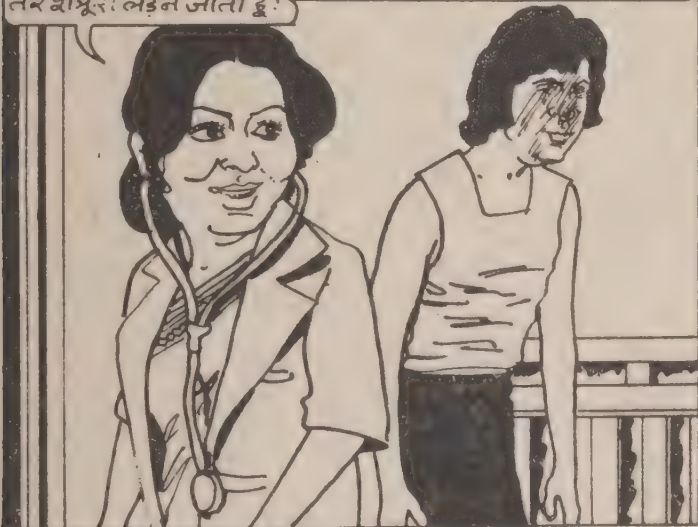
काले अफसर को यह आईडिया पसंद नहीं आया इसलिए उसने एक दूसरी तरकीब लडाई। उसने अपना नाज़ुक दिल उसके पत्थर दिल से बदल लिया और फिर शेर होकर बेचारे शत्रु की खूब पिटाई की। शत्रु ने भी गुस्से में आकर उसे श्राप दे दिया।
बेटा याद रख!! देखना अब तू फिर हीरे से कोयला बन जाएगा! फिर मुन्नी भटियारन तुझे भाड़ में झोंककर, मज़े ले लेकर गाने गाएगी!

यहां धनराज अपनी प्रजा के लिए व्याकुल थे।
कोई ऐसा प्रोग्राम बनाइए जिसमे द   रा भी नुकसान न हो और मज़दूरों का फायदा भी!
?! बिलकुल ऐसा ही होगा! मैंने कुछ ऐसा ही प्रोग्राम बनाया है! आप के कान की सुरंग खोद कर हम उसका कचरा साफ़ कराएंगे! फिर इस कान से उस कान तक एक और लंबी सी सुरंग बनवा लेंगे! जब दोनों कानों के सुराख मिल जाएंगे तो समस्या हल समझो!

वह कैसे?
फिर मजदूरों की मांगे आप एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया करना! इसका एक और फ़ायदा भी है.....
Husain Zamin

वह क्या?
वह यह कि आपके जंग लगे सड़े हुए दिमाग को ताजा ताज़ा ऑक्सीजन भी हर समय मिलता रहेगा और उसमें गन्दे मज़दूरों का गन्दा ख़याल न रहा करेगा!

नहीं नहीं हम ऐसा नहीं कर सकते। हम उनके अन्नदाता हैं, माई बाप हैं। हम चाहते हैं कि उनका भला हो!
फिर आपने जो सोच रखा है उसे कह ही डालिए!

उस नए छोकरे का आइडिया हमें बेहद पसंद आया है! सुरंग नम्बर चार को खोद खोद कर सागर से मिलवा दिया जाए। इस काम से चालीस लाख का फायदा तो होगा ही साथ ही चार सौ सिसकते मजदूर अपनी परेशानियों से छुटकारा पा जाएंगे।
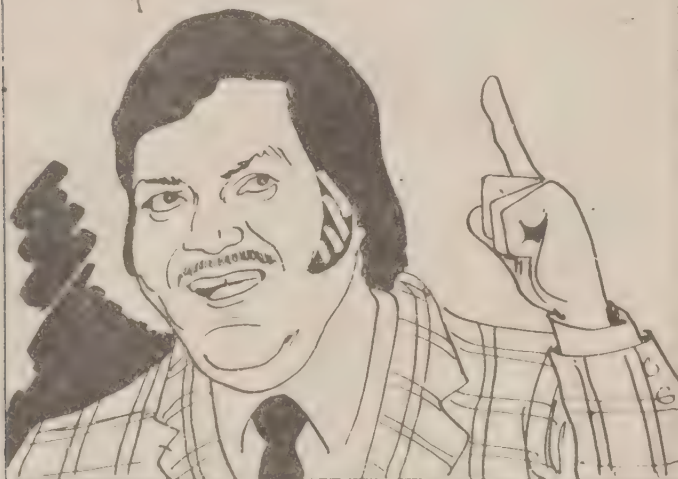
सुरंग से पानी निकल कर बस्ती का सफाया कर देगा सो अलग। बहुत सी दुखी आत्माओं को शान्ति मिलेगी और इनकम टैक्स वालों को हम अपना नुकसान बताएंगे सो अलग।

बड़ा धासू आईडिया है! यह सब नेताओं की संगत में रहने का नतीजा है। चाहे कैसा ही काला धंधा क्यों न अपना लो मैल सफेद कपड़ों को छू भी नहीं सकता! काला मुंह हो तो बस उन गरीब मजदूरों का!

धनराज ने अपने प्लान के अनुसार न सिर्फ़ बस्ती को साफ कर दिया बल्कि यशराज चोपड़ा की लुटिया भी उसी में डुबो दी। पर उसे क्या पता था कि यशराज ख़ुश हो रहे थे।
हम तो चाहते ही थे कि एक फ्लाप बने ताकि इनकम टैक्स वालों को अपना घाटा बता सकें। ही ही ही !!! जो बात 'नूरी' न कर सकी उसे 'काला अफसर' ने कर दिखाया!

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

दूसरा दाव

यदि विरोधी अपने घूंसे की चोट आपके सिर पर करना चाहता है तो विरोधी के घूंसे को अपने हाथ से रोक लीजिए तथा हाथ को घुमाते हुए नीचे की ओर लाइए, साथ ही

अपने दूसरे हाथ से विरोधी की गर्दन को पकड़ कर झटका देते हुए नीचे की ओर झुकाइए और फिर अपने घुटने का प्रहार विरोधी के मुंह पर कीजिए।

तीसरा जूडो दाव

यदि शत्रु पीछे आकर आपको जकड़ लेता है और आप हाथ-पैर चलाने से मजबूर हो जाते हैं तो ऐसे में आप झटके से आगे की ओर नीचे झुकिए तथा साथ ही अपने कूल्हों को पीछे की ओर ले जाते हुए ऊपर की ओर झटका दीजिए। शत्रु उछल कर गुलांट खाता हुआ आपके सामने आकर गिरेगा। फिर आप जूडो का कोई भी बेहतरीन दांव लगा कर शत्रु को काबू में कर लीजिए।

कभी सिर दाएं झुकाइए, कभी बाएं। कभी एकदम बैठ जाइए, कभी कूदिए, कभी पेंतरा बदलिए। ध्यान रखिए कि शरीर का संतुलन बिगड़ने न पाए और आप गिर न जाएं। मन में दृढ़ता बनाये रखिये। ऐसा अवसर खोजिये कि आप प्रतिपक्षी का डंडा छीनकर आक्राम डंडासन कर सकें।

चौथा जूडो दाव

मान लीजिए यदि आपका दुश्मन पीछे से आकर आपकी कमर पकड़ लेता है और आप उसकी ओर घूमने में असमर्थ हो जाते हैं तो ऐसे में अपने बायें हाथ से शत्रु का आपको कमर से होता हुआ पेट पर आया हाथ कसकर पकड़ लें और थोड़ा आगे झुककर कूल्हे का भाग झटके से पीछे करें और पकड़े हुए शत्रु के हाथ को दायीं ओर से आगे खींचें जैसे ही शत्रु आपकी बायीं ओर से थोड़ा आगे आने पर मजबूर हो—आप एक जोरदार झटके से उसे और आगे लाने का प्रयत्न करते हुए अपना बायां पैर बायीं बगल से ही थोड़ा फैलाते हुए शत्रु के दायें पैर से अड़ा दें क्योंकि जब आप उसे दायीं ओर से खींचेंगे तो उसका दायां पैर जैसे ही उसके बायें पैर से अड़ेगा—वह संतुलन खोकर आपके आगे गिरेगा।

चौथे दाव का काट

और मान लीजिए आप स्वयं ही अपने किसी शत्रु को पीछे से जाकर पकड़ लेते हैं और वह आप पर यही दाव (चौथा जूडो दाव) आजमाता है तो ऐसी स्थिति में जैसे ही वह झटके से कूल्हों को पीछे कर आपको आगे लाने की कोशिश करे—आप भी अपनी जांघ के ऊपर वाले हिस्से से या उसी हिस्से से जहां शत्रु के कूल्हे स्पर्श करें—उसके कूल्हों को जोर से धकेलें। कूल्हों को आगे धकेलते हुए उसकी छाती पर अपने हाथ पहुंचा कर छाती को अपनी ओर खींचें। शत्रु आपकी ओर यानी पीछे की ओर झुक जायेगा। घुटने को आगे निकालकर शत्रु के कूल्हों के नीचे टिकाते हुए हाथों का सहारा लेकर उसे ऊपर उठा लें। शत्रु खिलौने की तरह आपके हाथों में टंग जायेगा। फिर तुरन्त ही उसे जितना ऊपर उठा सकें—उतना उठाकर जमीन पर जोरों से नीचे लाते हुए पटक दें। यह पूरी क्रिया इतनी शीघ्र करें कि शत्रु के शरीर का भारीपन महसूस न कर पायें। जितनी फुर्ती से यह क्रिया करेंगे—शत्रु के शरीर का भार उतना ही हल्का महसूस होगा।

पांचवां जूडो दाव

मान लीजिये यदि आपका शत्रु आपको पीछे से हाथों को भी जकड़ लेता है और आप हाथों को ऊपर उठाने में असमर्थ हो जाते हैं तो ऐसी स्थिति में भी आपको घबराने की जरूरत नहीं है। आप दोनों पैरों को तुरन्त चौड़ा कर बीच की दूरी बना लें और दोनों पैरों के घुटने मोड़ लें और आगे की ओर नीचे झुक जायें। फिर अपने लटके हुए हाथों को अपने दोनों पैरों के बीच की दूरी से अन्दर पीछे की ओर लें जाकर दुश्मन की जो टांग आगे निकली हो उसे पकड़ कर अपनी दोनों टांगों के बीच से आगे की ओर ऊपरी दिशा में झटके से खींचें। ऐसी स्थिति में दुश्मन की उस खींची हुई टांगों की जांघ का ऊपरी हिस्सा आपके कूल्हों को स्पर्श करेगा। आप फौरन कूल्हों की सहायता से उसकी जांघ पर नीचे दबाव डालिए और टांग का पंजा पकड़कर आगे ऊपर की ओर खींचिए। ऐसी स्थिति में दुश्मन पीछे सिर के बल बुरी तरह गिरेगा।

क्रमशः

सम्भावना

उन्हें,
कुर्सी-वियोग की सम्भावना से,
सत्ता-प्राप्ति की लिप्सा के
अजीर्ण के कारण,
घोर स्वार्थ में भी,
जन हित का स्वाद आ रहा है।
घातक पैंतरे बाजी के कारण,
सत्ता प्राप्त न होने पर,
कई दुष्कृत्यों का परिणाम—
याद आ रहा है।

काका हाथरसी

आधुनिक योगासन

काका हाथरसी लिखित अप्रकाशित पुस्तक 'भोगा एण्ड योगा' का एक अंश

१०. डंडासन

विधि

इस आसन के दो प्रकार हैं—आक्रामक और रक्षात्मक। आक्रामक आसन में सर्वप्रथम सीधे खड़े हो जाइए, मुट्ठी में डंडा पकड़ा हुआ है, ऐसी कल्पना कीजिए। बनैटी घुमाने की तरह स्वयं घूमते हुए डंडा संचालन कीजिए। पंजे ऊंचे करके, एड़ी के बल डंडे सहित चार चकरघिन्नी दाहिनी तरफ और चार बाईं तरफ काटिए।

रक्षात्मक डंडासन में आपको कल्पना करनी पड़ेगी कि कोई आप पर डंडे का प्रहार करने को आमादा है। आप उन प्रहारों से क्रमशः बचने का उपक्रम कीजिए।

लाभ

डंडा का इस विश्व में, करते सब सम्मान,
देखो पुलिस विभाग में, डंडा अस्त्र प्रधान।
डंडा अस्त्र प्रधान, लुगाई इसकी लाठी,
जिस पर भी पड़ गई, खोपड़ी उसकी फाटी।
भले-भले कैंडीडेटों की फूंक सरकती,
जिसका डंडा प्रबल, सीट उसको ही मिलती।
जब हो लाठी चार्ज, होंय सब गुंडे ठंडे,
डंडे के बिन व्यर्थ, पार्टियों के सब झंडे।

११. मुर्गासन

विधि

इस आसन से अधिकांश साधक, बाल्यकाल से ही परिचित होंगे। शायद ही ऐसा कोई विद्यार्थी हो जिसे बचपन में मुर्गा बनना न पड़ा हो।बचपन का अभ्यास समाप्त हो जाने के कारण एवं मुर्गासन में त्रुटियां रह जाने के कारण सुखद परिणाम नहीं मिलता। अतः उसका प्रयोग शुद्ध रूप में करना आवश्यक है। विधि वही है, किन्तु अब उसे बजाय बच्चों के बड़ों को करना पड़ेगा, अतः मनोभावों में कुछ परिवर्तन आवश्यक हैं।

लाभ

मुर्गा हमको बनाते, थे जब मास्टर साब,
तब से मन में घुस गया, मुर्गासन का भाव।
मुर्गासन का भाव, अहं सारा खो जाता,
भूला हुआ पाठ, फौरन जिव्हा पर आता।
जब पत्नी लेकर आए, बेलन या डंडा,
खुद मुर्गा बन जाउ, क्रोध हो जाए ठंडा।
मत रक्खो ऐलार्म घड़ी, खुद काम करोगे,
प्रातः ठीक समय पर कुकड़ूं कूं बोलोगे।

१२. बगुलासन सीटासन

विधि

इस आसन में आंख और पैर का संचालन मुख्य है। आपके बगल में कुछ पीछे की ओर एक कुर्सी रखी जाएगी। इस आसन को करने के लिए अब आप बायां पैर मोड़कर दायें पैर के घुटने पर टिका दीजिए एवं एक ही पैर पर खड़े रहिए। अब आपको एक से बीस तक तेज गति से गिनती गिननी हैं। जैसे ही नौ तक गिनती गिन चुकें और दस का नम्बर आए। एक झटके से कुर्सी की ओर देखकर ग्यारहवीं गिनती तक नम्बर वापस लाकर पूर्व स्थित में आ जाइए। गिनतियां जारी रखिए एवं

इस बीच अनुमान लगा लीजिए कि कुर्सी से आप कितनी दूर हैं। बीस की गिनती आने तक आपको एक टांग से ही छलांग लगाकर कुर्सी पर जम जाना है। आसन करते समय एक दो बार गिर पड़ें तो घबराइए मत। पुनः-पुनः प्रयास कीजिए। मुख मुद्रा से त्याग की भावना दिखाते रहिए। 'कुर्सी झपटने' में सफलता मिलेगी। इस आसन को 'सीटासन' भी कहते हैं।

लाभ

सत्ता के लोभी नहीं, त्यागमूर्ति श्रीमान,
लेकिन मंत्री सीट पर, रखें हमेशा ध्यान।
रखें हमेशा ध्यान, मिला मनमाफिक मौका,
प्रतिपक्षी में पिछपाड़े से चाकू भोंका।
कहं काका कवि, बगुला भक्ति दिखाता नकली,
अवसर पाकर तुरत गटक जाता है मछली।
बगुलासन भी यह शिक्षा नेता को देता,
करके कुरसी भक्ष, लक्ष्य अपना पा लेता।

१३. ट्रैफिक पुलिसासन

विधि :

इस आसन को प्रायः सभी ट्रैफिक पुलिसमैन जानते हैं, लेकिन अधिकांश इसे गलत ढंग से करते हैं। इस आसन में आंख बंद करना जरूरी है।

सीधे खड़े हो जाइए। नेत्र बन्द कर लीजिए। दायां हाथ उठाकर सामने की तरफ हथेली उठाइए। इस हाथ को यथावत् रखकर, दूसरे हाथ से मक्खियां उड़ाने जैसा अभिनय कीजिए। पुनः इस क्रिया को उलटिए अर्थात् अब बायें हाथ को तानकर स्थिर कीजिए और दाहिने हाथ से मक्खियां उड़ाने की भावना दिखाइए। आंख खोलने से यह आसन भंग होता है।

लाभ

बीच सड़क पर खड़े हैं, नेत्र कर लिए बंद,
आने जाने के लिए, ट्रैफिक है स्वच्छंद।
ट्रैफिक है स्वच्छन्द, फिल्म के गाने गाओ,
उल्टे, सीधे, आड़े तिरछे हाथ चलाओ।
कार लड़ें, टूटें फूटें, मत चिंता करना,
मरने वालों की संख्या पर ध्यान न धरना।
पेट्रोल की खपत इसी से घट सकती है,
"फैमिली प्लानिंग" की खाई भी पट सकती है
कहं काका कवि, कई लाभ देगा यह योगा,
'भरत नाट्यम' का अभ्यास मुफ्त में होगा।

फैण्टम — जंगल शहर

"हमें" से तुम्हारा क्या मतलब ?

मगर वो हरेक पर उस पार्क में बहुत भारी पड़ता है ।

हां !

जरूरत है
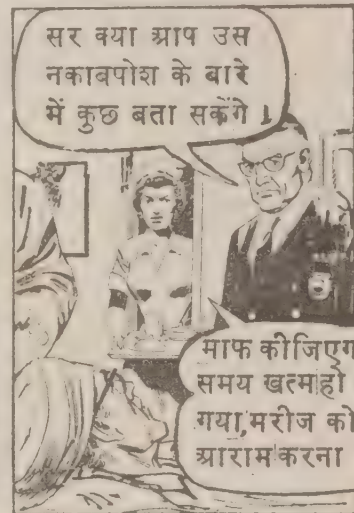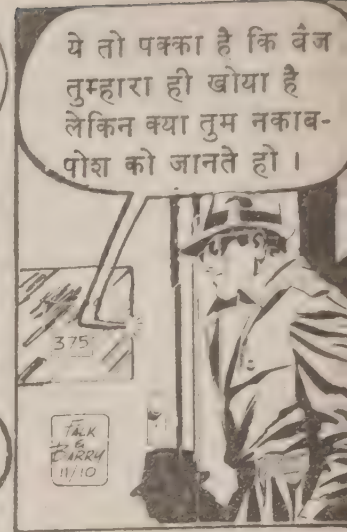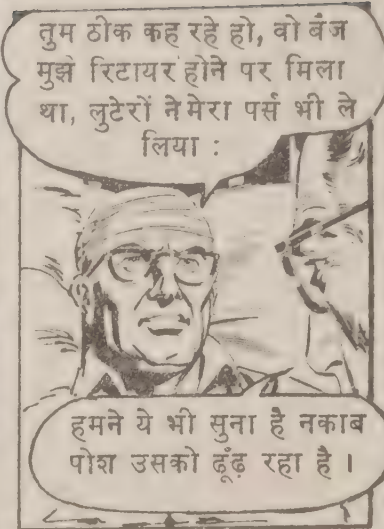
देश को एक प्रधान मंत्री की

योग्यतायें—झुमरी तलैया से वकालत पास, सोते जागते मुंह में महात्मा गांधी का नाम, लालची और हेराफेरी करने में माहिर। रिश्तेदारों का होना अतिरिक्त योग्यता मानी जायेगी, (कपूत हो तो प्राथमिकता)। आयु ७० से ऊपर, बगैर लाठी के खड़ा भी न हो पाये, कभी एक बात पर न टिका रहे, जरूरत पड़ने पर अदालतों का मजाक बनाने की आदत, कानों का कच्चा हो, अपने साथियों से हर वक्त झगड़ता रहे, जितने ज्यादा सनक होंगे उतना ही अच्छा, छुआछूत में दिल से विश्वास रखता हो, याददाश्त उतनी ही कमजोर हो जितना चोट लगने पर हिन्दी फिल्मों के हीरो की होती है अर्थात वादे करे और साथ ही भूल जाये, वास्तविकता से कोई नाता न हो। हमेशा मूर्खों की दुनिया में खोया रहे, देश भाड़ में जा रहा हो तो बचाने की कोशिश न करे, उल्टे अपनी तरफ से थोड़ा-सा और धक्का दे, भूख गरीबी और बेकारी की समस्याओं को हल करने में समय नष्ट न करे और कुर्सी बचाने के लिए शर्म, हया बेचकर जोड़-तोड़ करे।
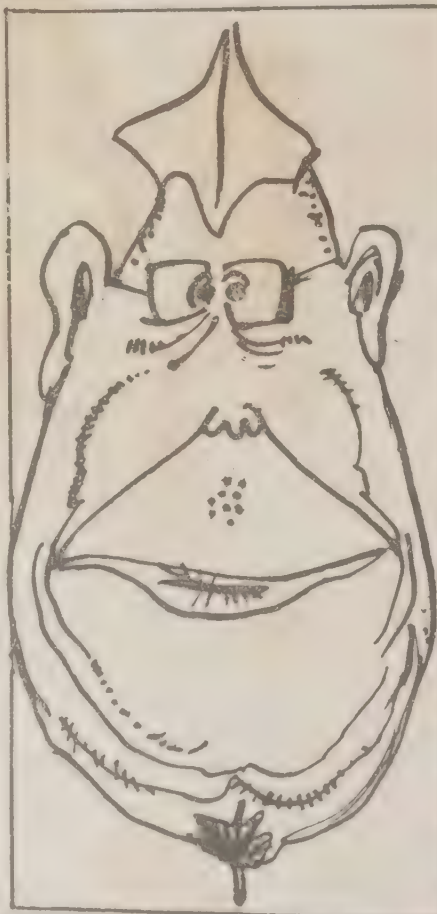
वेतनमान—तनख्वाह के अतिरिक्त सरकारी डिनर पार्टियों में मुफ्त खाना, बेटे और रिश्तेदारों को लूट मचाने की पूरी छूट, विदेशी सौदों में कमीशन और भी कई नावां बनाने के तरीके जिन्हें प्रधान मंत्री बनने के बाद अफसर समझा देंगे (देश के हित में उन्हें यहां बताना उचित नहीं है)।

अपने आवेदन फौरन निम्न पते पर भेजें—

मतदाताचन्द,
मूर्ख जनता भवन
दलबदलू विभाग,
विश्वासघाती स्ट्रीट,
नयी दिल्ली-११०००१

प्र० : क्या मछलियों के हृदय होता है और ये मनुष्य हृदय के समान ही कार्य करता है ? — आफताब अहमद — अजमेर

उ० : कभी-कभी इस बात की कल्पना करना भी कठिन होता है कि हमसे पूर्णतया भिन्न दिखने वाले जीवों के शरीर के भीतर के अंग भी हमारे अंगों के समान ही कार्य करते हैं। ऐसा समझा जाता है कि ठंडे रक्त वाली मछली के या तो कम अंग होते होंगे या इसकी कोई इन्द्रीय अवश्य ही कम होती होगी। वास्तव में मछली के शरीर की बनावट उच्च गर्म रक्त वाले प्राणी के शरीर की बनावट के समान ही होती है। इसीलिये मछली को जीवन के क्रम विकास का एक अच्छा प्रमाण समझा जाता है, साथ-साथ इससे इस मत की पुष्टि भी होती है कि स्थल जीवों के पूर्वज जलजीव ही थे।

मछलियां मनुष्यों के समान ही सांस लेती हैं। ये हमारे समान ही खाकर अपने भोजन को पचाती हैं। इसी प्रकार इनके शरीर में भी नस तन्तु बिछे हुए हैं। इन्हें शारीरिक तकलीफ मनुष्यों के समान ही अनुभव होती है।

इनके छूने की इन्द्रिय बहुत ही विकसित होती है, ये अपनी त्वचा से महसूस भी करती हैं साथ-साथ किसी चीज के स्वाद का भी पता लगा लेती हैं। सिर के ऊपर स्थित इनकी नाक में सूंघने के दो अंग होते हैं, इनके बाहरी कान नहीं होते परन्तु भीतरी कानों से सुनती हैं। इनकी आंखें रीढ की हड्डी वाले पशुओं के समान ही होती हैं।

तो आपने देखा मछलियों के शरीर में मनुष्य के समान ही सब कार्य करने के लिये सिस्टम होते हैं। इनमें से दो के बारे में विस्तार से जानकारी लें। पहला पाचन-क्रिया तथा दूसरा परिसंचारी सिस्टम। मछली का भोजन गले से होकर पेट में पहुँचता है। यहाँ गैस्टरीक ग्रंथियाँ होती हैं, तथा यहां पाचन क्रिया आरम्भ हो जाती है।

इसके बाद भोजन आंतों में पहुँचकर रक्त में सोख लिया जाता है। भिन्न-भिन्न जाति की मछलियों की पाचन क्रिया के सिस्टम भिन्न होते है ताकि उनके द्वारा खाई गई वनस्पति या मछली इत्यादि पचाई जा सके।

मनुष्य के समान ही मछली के शरीर में भी रक्त परिसंचारी प्रणाली द्वारा प्रवाहित होता है जो शरीर के भिन्न अंगों को भोजन तथा ऑक्सीजन पहुँचता है।

मछली के शरीर में भी मनुष्य के समान ही हृदय कार्य करता है। मछली का हृदय मीन पक्षों के पीछे नीचे को होता है तथा ये हमारे हृदय के समान ही सिकुड़ता या फैलता या धड़कता है। संसार में हजारों प्रकार की मछलियाँ हैं जो अपने जीवन के विशेष तरीके से जीती हैं परन्तु इनके अंग तथा इन्द्रीय हमारे समान ही हैं।

प्र० : क्या रेल बिना पटरियों के भी चल सकती हैं ?

उ० : लम्बे समय से रेल के इंजीनियर रेलों को चलाने के लिए नये प्रकार की पटरियां बनाने की खोज में लगे हुए हैं क्योंकि पुराने समय से चली आ रही रेल चलाने की पैरेलेल पटरी आज के आधुनिक युग के स्तर पर नहीं समझी जाती साथ-साथ ये इतनी बढ़िया भी नहीं होतीं। इन पुराने किस्म की पटरी पर चलाने के लिए पहियों की आवश्यकता पड़ती है और पहिया घुमाने के काम को करने के लिए भिन्न-भिन्न भागों को चलाने में बहुत-सी उपयोगी ऊर्जा नष्ट हो जाती है। साधारण पटरी पर मोड़ो इत्यादि पर तो रेल की गति काफी कम करनी पड़ती है और गति का हर समय विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इन रेल की पटरियों को बिछाने के लिए काफी स्थान की जरूरत होती है साथ-साथ इनकी देख-भाल में भी काफी धन व्यय होता है।

कुछ रेलें रबर के टायरों पर चलाई जाती हैं। इनमें पेरिस की मैट्रो बड़ी कुशलता से रबर के पहियों पर चलती हैं। इससे भी अनोखी खोज इस दिशा में 'मोनो रेल' की खोज है। मोनो रेल का अर्थ है एक पटरी वाली रेल। इस रेल को एक पटरी पर मोनोरेल के सहारे लटका कर चलाया जाता है, इसकी गति तथा सुविधा उल्लेखनीय है।

इससे भी भिन्न है वो रेल जो कि छाह या सीमेंट से बने एक पथ पर रख दी जाती है तथा ये इस पथ पर सरकती है। एरोट्रेन कहलाने वाली रेल होवरक्राफ्ट के समान ही पृथ्वी पर चलती है। ये अपने वजन के कारण पृथ्वी के करीब रहती है परन्तु चलती ये भी हवा के कुशन पर है।

इससे भी विचित्र तथा आधुनिक विचार मोनोरेल को चुम्बक की सहायता से इसके पथ पर लटका कर चलाने का है। इस प्रकार की रेल को कितनी भी तेज चलाने पर रगड़ उत्पन्न नहीं होती और इस कारण इसकी गति अधिक और खतरा कम होता है।

रेलों को चलाने के लिये नई प्रकार की जैट उर्जा शक्ति का प्रयोग करने पर भी विचार तथा खोज की जा रही है। आशा है निकट भविष्य में ऐसा दिन भी आ जायेगा जब रेल भी वायुयान के समान ही तीव्र गति से चलेंगी।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल पिलपिल और
कविता का चक्कर
आदमी को अपने घर में घुसे बैठे नहीं रहना चाहिये। चांदनी रातों को बाहर निकल कर प्रकृति की गोद में सैर करनी चाहिये। कैसी मनोहारी फिजा है। पीला-पीला चांद दिल के सोये भावों को जगा रिया है। ऐसे में हर आदमी कवि बनने को चाहेगा।
इस फिजा का असर देखो, मेरे दिल में भी कविता उठ रही है।
चांद है पीला पीला, मेरी शर्ट का रंग नीला नीला।
तू मेरा मजाक उड़ा रिया है?
तेरा रूमाल नाक पोंछ कर है गीला गीला, दिमाग का पेच भी है कुछ ढीला ढीला। खाले हकीम साहब का बादशाही तिला, थक गये बोत ल्या निकाल बीड़ी पिला। अपना सिर हिला, दोनों आंखें मिला।
मेरे भाई, कविता ऐसे नहीं होती। कविता कोई भैंस या डंगरों का चारा नहीं है। कविता दिल की सूक्ष्म भावनाओं की खिड़की है जिसमें से सामने रहने वाला चांद का टुकड़ा नजर आता है।
कविता में दिल का कार्डियोग्राम नजर आना चाहिये। कविता में भाव होने चाहियें।
पहले क्यों नहीं बताया तूने? भाव वाली कविता बनाता हूं अभी।
सुन मेरी बिल्लो, साबुन पांच रुपयेकिलो, गेहूं धड़ा १८० रुपये, दाल उड़द २३० रुपये, चना साबुत १२० रुपये गुड़ भेली तीन रुपये।
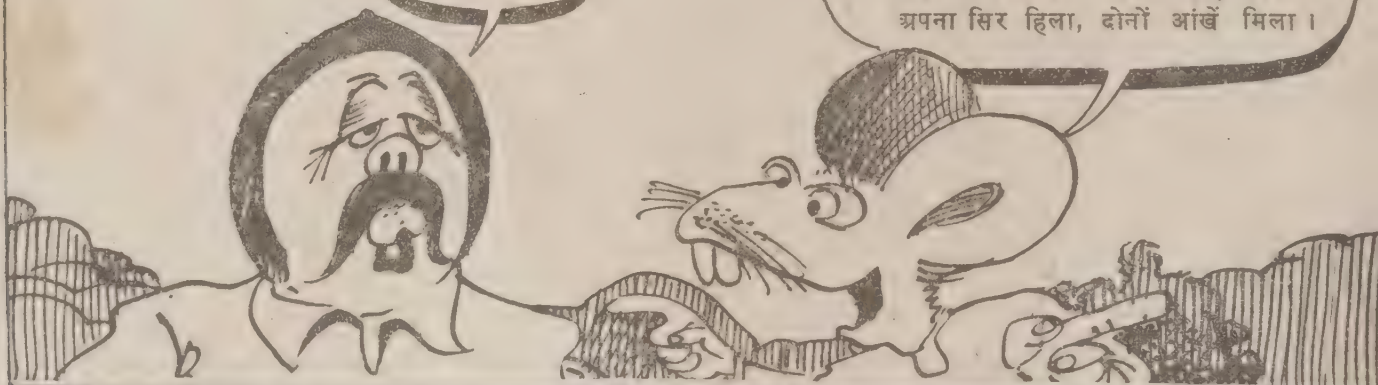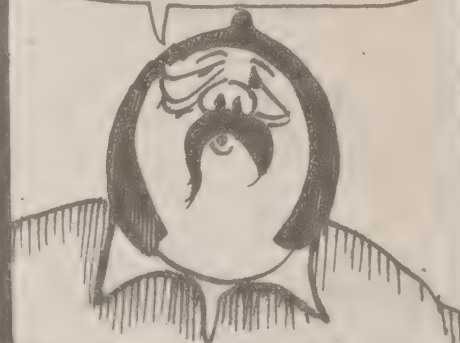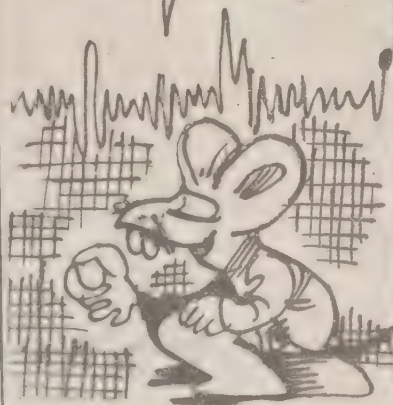
मेरे यार, तू अब भी नहीं समझा। कबिता तुझे इतनी जल्दी समझ में नहीं आयेगी। तूने कविता के नाम पर रेडियो जलन्धर का देहाती भाइयों का प्रोग्राम शुरू कर दिया। लेकिन तू मत घबरा, मैं तुझे कविता का अर्थ समझा कर ही रहूंगा। पहले तू यह समझ ले कि अवल भैंस से बड़ी होती है। कविता में भैंस के साइज की बातें नहीं होनी चाहियें। कविता सूक्ष्म चीज है, जैसे मुर्गी का चूजा, बत्तख का अंडा, हिरण की आंखें, मोर की चाल।
कविता क्या है ? कविता चिड़िया घर है. इतनी तो समझ आ गयी।
कविता चिड़िया घर नहीं है। यार यह कुछ और चीज है। दिल की कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति है। कोमल-कोमल जैसे मलाई कोफ्ता होता है या रसगुल्ला होता है। मुंह में जाते ही घुल जाता है कुछ समझा ?
मलाई कोफ्ता ! कीमा करी ! मटन पुलाव, चिकन विरयानी ! मजा आ गया, अब पता लगा कि कविता तन्दूरी माल होता है। पंजाबी ढाबे में बैठकर कितनी बढ़िया कविता दिमाग में आयेगी। पेट में अभी से चूहे उछलने लग गये।
हिम्मत मत हार मेरे यार। कोशिश करने पर एक दिन कविता तुझे समझ में आ जायेगी।
ठीक है। मैं भी हार नहीं मानने वाला। कविता का पर्दाफाश करके ही रहूंगा। आज से अपना सारा जीवन कविता की सेवा में लगाऊंगा। कविता पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दूंगा। कविता को अपना बना कर ही रहूंगा। कविता मेरी है। मेरी रहेगी। किसी ने बुरी नजर डाली तो आंखें निकाल दूंगा।

लफंगे ! तो तू ही है वह बदमाश जो मेरी बहन कविता को गुमनाम पत्र लिखा करता है । आज बड़े मौके पर हाथ आया बच्चू तू । इतने दिनों से मुझे तेरी तलाश थी—आज मैं तुझे मार-मार कर चरणदास बना कर ही रहूंगा ।
अरे साहब आपको गलत फहमी हो गयी है । यह आपकी बहन कविता का जिक्र नहीं कर रहा था । यह तो पोयट्री की बात कर रहा था पोयट्री।
आये यह पोल्ट्री वाला हो या कमेंट्री वाला मैं मैं इसे सबक सिखा दूंगा । तू हट जा बीच में से ।
OUTSWINGER!
मेरे जिग्री दोस्त का जालिम ने यह क्या हाल कर डाला ! धोती फाड़ कर रूमाल कर डाला ! अच्छे भले आदमी को जनता एस बना कर रख दिया ।
बेचारे को दिन में तारे नजर आ रहे हैं । तारों में कई और ग्रह भी नजर आ रहे हैं । इनको देख कर कविता के भाव उभर रहे हैं ।
चांद तारों का है रेड़ा,
मेरे यार का मुंह हो गया टेढ़ा,
यह क्या लिया कविता का बखेड़ा,
पड़ा बुरे ग्रहों का गेड़ा ।
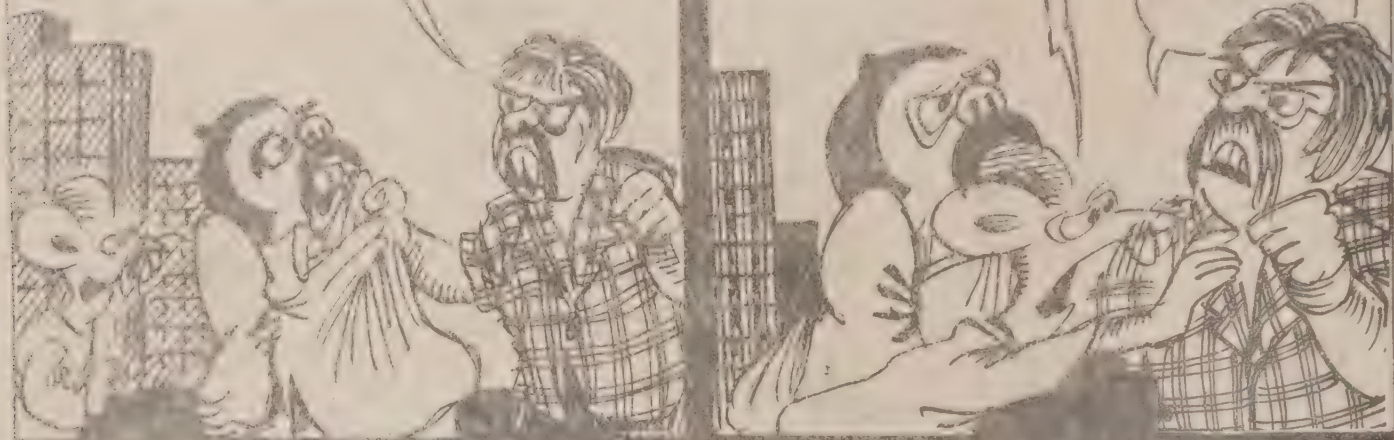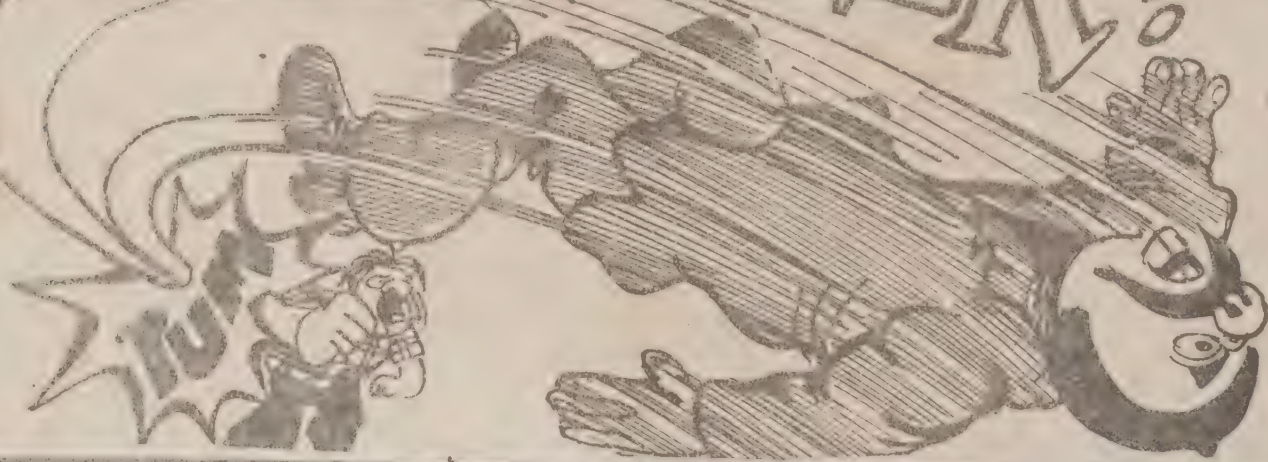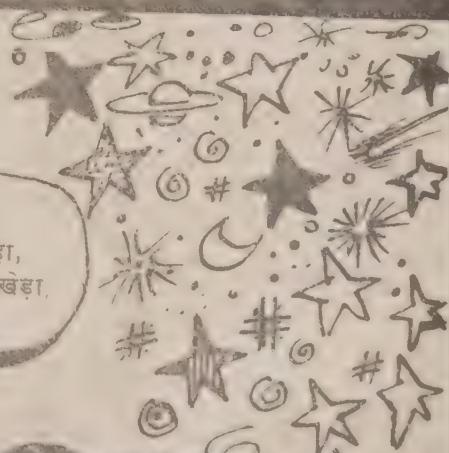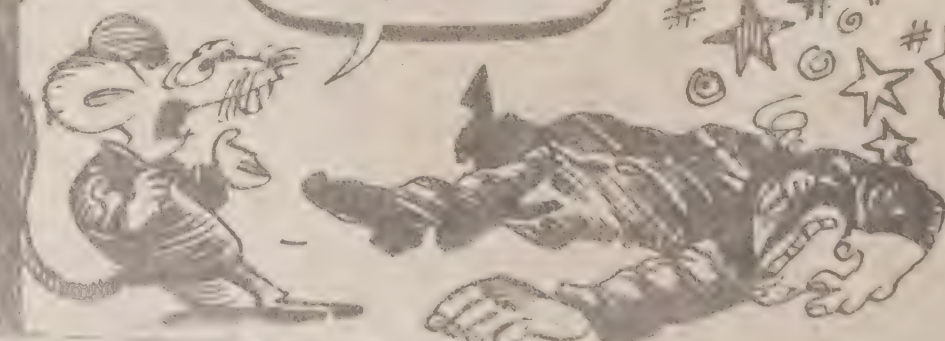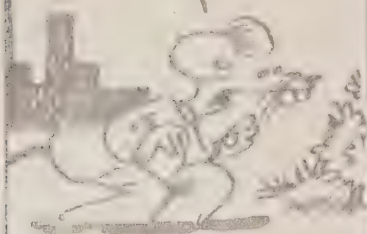
मेरे यार उठ । हिम्मत कर । हम दोनों उससे बदला लेकर रहेंगे। हम इस पिटाई को चुपचाप बर्दाश्त नहीं करेंगे । उठ और कमर कस ले । तूने उस कविता के लिये इतनी मार खाई जबकि तूने किया कुछ नहीं था । अब इतनी मार खा ही ली है तो चल उसकी बहन कविता को ले जायेंगे । ले जायेंगे, ले जायेंगे, दिल वाले दुलहनियां ले जायेंगे ।
ठीक है ! यही ठीक है ।
मैं बीड़ा उठाता हूं···खैर यहां बीड़ा नहीं है हमारे पास । इसलिये मैं यह बीड़ी पीता हूं और कसम उठाता हूं कि उस आदमी की बहन कविता को मैं शादी करके अपनी बना लूंगा । अब वह मेरी है और मेरी रहेगी ।
जब तक कविता को लेकर मैं आर्य समाज मन्दिर में सात फेरे नहीं लगाऊँगा तब तक अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा । कोमल हृदय के कवियों को दुनिया वालों ने अब काफी सता लिया । बस ! अब और नहीं । हमने लड़ाई लड़ने की ठान ली है । उसने सोते शेर को जगा दिया है । सांप की बांम्बी में हाथ डाल दिया है ।
शाबाश
चूहे, यह प्रण लेकर गलती तो नहीं कर बैठा मैं ? पेट में चूहे कूद रहे हैं,जाने कविता से शादी कब होगी ? तब तक मैं बिना अन्न जल के कैसे जिन्दा रहूंगा ?
तू फिक्र मत कर आड़े वक्त तेरा यार गरीबचन्द ही काम आता है । तूने अन्न जल न लेने का ही तो प्रण किया है । बिना अन्न जल के खाने की बहुत सारी चीजें हैं । रोस्ट लैम्ब, मटन कटलेट विद पोटेटो चॉप्स, तन्दूरी मुर्गा, सेब, नाशपाती, अंगूर, बादाम, दूध, दही, बैंगन का भर्ता, कीमा भरा शिमला मिर्च व करेला, भिंडी, गोभी, टूटी फ्रूटी आइस क्रीम, डबल सेवन, कैम्पाकोला सोडा, जिन रम, व्हिस्की, शैम्पेन, बियर-वाइन और न जाने क्या-क्या । अन्न जल छोड़कर तो तू ऐश करेगा । अन्न जल तो घटिया चीजें हैं ।
अगले अंक में कविता का अपहरण
सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए ।
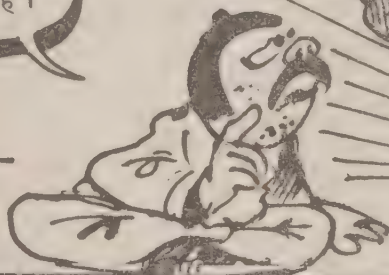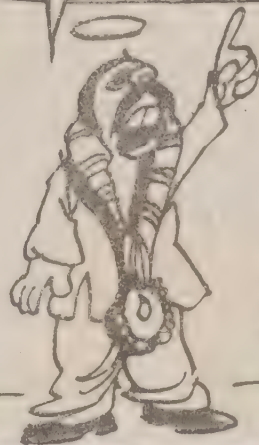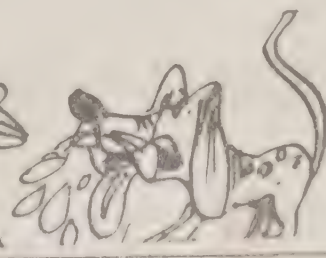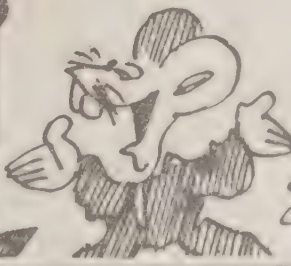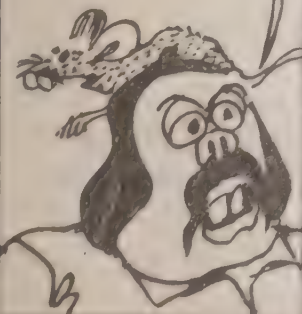
'घबराओ मत शोभना···तुम्हारी बेटी को घर ले आया हूं।'

'सच ···!' शोभना खुशी से उछल पड़ीं और बोलीं। 'कहां है मेरी बेटी···? मेरी चांद कहां है ?

'यहीं है तुम्हारे पास।' सेठ साहब ने मुन्नी का हाथ पकड़कर कहा,'जाओ बेटी··· अपनी मां के पास।'

मुन्नी के होंठों से एकाएक कंपकंपाती आवाज निकली—

'मां···मां···।'

'पद्मिनी···मेरी लाल।'

और दूसरे ही क्षण मुन्नी शोभना के सीने से लगी हुई सिसक-सिसकर रो रही थी। शोभना पागलों की भांति उसे चूम-चूमकर प्यार किए जा रही थी।'

'मेरी लाल···मेरी चांदनी बेटी···तू क्यों इतने दिन मेरे कलेजे से अलग रही थी।'

'मां···मेरी अच्छी मां···'

दोनों बिलख-बिलखकर रो रही थीं। मुन्नी को लग रहा था जैसे वह सचमुच अपनी मां रामदेई के सीने से लगी हुई थी ? पास ही खड़े सेठ जी की आखों में आश्चर्य भी था और सन्तोष भी···ड्राइवर भी विस्मय से खड़ा यह विधाता का अनोखा खेल देख रहा था···शोभना रोती हुई कांपते स्वर में कह रही थी—

'हे भगवान् तू बड़ा दयालु है···तेरा लाख-लाख शुक्र है कि तूने पद्मिनी को मुझे लौटा दिया···हे प्रभु···मैं तेरे मंदिर में सोने का दीपक जलाऊंगी, सारे तीर्थों की यात्रा पर जाऊंगी—और अपनी बेटी को नया जीवन मिलने पर इतना बड़ा एक उत्सव मनाऊंगी कि लोगों ने इससे बड़ा उत्सव पहले कभी न देखा हो—मैं कितनी खुश हूं... भगवान् !'

और फिर वह अत्याधिक हर्ष के कारण रोने लगी।

सेठ साहब ने कार पोर्टिको में रोकी··· और उतरकर तेज-तेज चलते हुए अन्दर आए और पुकारने लगे—

'शोभना···अरे कहां हो तुम शोभना?'

'आई नाथ···।'

शोभना थोड़ी देर बाद निकली तो उसका एक हाथ मुन्नी के कंधे पर रखा हुआ था। सेठ साहब ठिठक गए और बोले—

'अरे···बेटी पद्मिनी भी तुम्हारे साथ है ?

'बेटी···!!' शोभना खुशी से कंपकंपाती आवाज में बोली, 'यह तो मेरा बेटा बनकर रह गयी है—जिस दिन से हस्पताल से लौटी है इसने मेरी छड़ी को एक कोने में रखवा दी है—फिर सुबह से जो मेरी छड़ी बनती है तो रात तक मुझे छड़ी का सहारा नहीं लेने देती।

'सच ···!'

'और क्या···जो काम एक मां को अपनी
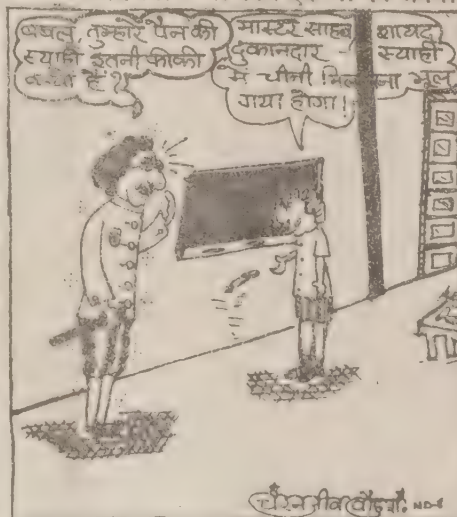
बच्ची के लिए करने चाहिए वह सारे काम यह आप करती है—मुझे अपने हाथों से नहलाती है···मेरे सिर में कंघी करती है··· अपने हाथों से कौर बना-बनाकर मुझे खिलाती है—नाथ ! सचमुच, मुझे तो यूं लग रहा है कि पद्मिनी को जब से नया जीवन मिला है वह एक नयी पद्मिनी बन गई है।'

शोभना सिसक पड़ीं और फिर बोलीं—

'मैं तो बहुत कहती हूं बेटी···अब तू स्कूल जाना शुरू कर दे लेकिन यह कहती है कि जब इसका जी मेरी सेवा करते-करते भर जाएगा तभी यह स्कूल जाएगी।'

'शोभना !' सेठ साहब ने हंसकर कहा' 'पद्मिनी को अब हम बम्बई ही में स्कूल में दाखिल कराएंगे।'

'बम्बई में क्यों ?' शोभना ने जल्दी से पद्मिनी को सीने से लगा लिया, 'नहीं-नहीं ···मैं अपनी बेटी को बम्बई नहीं भेजूंगी।

'अरे···तुम गलत समझ रही हो···मैं अकेले इसे थोड़े भेज रहा हूं।'

'क्या मतलब?'

'बम्बई हम लोग भी तो चल रहे हैं··· और वह भी आज रात की गाड़ी से···मैं तुम्हें यही शुभ सूचना देने तो आया था।'

'मगर क्यों ?' शोभना ने आश्चर्य से पूछा, 'हम लोग अपना यहां का कारोबार छोड़कर भला बम्बई क्यों जाएंगे ?'

'मैंने यह खबर तुम्हें इसलिए पहले नहीं सुनाई थी कि तुम्हें सब कुछ एक साथ बताऊंगा···शोभना, तुम्हें मालूम नहीं था कि मैं बम्बई में एक कपड़े की मिल खरीदने की बातचीत कर रहा था और कल ही मुझे बम्बई से अपने वकील का पत्र मिला है कि मिल का सौदा हो गया है। मेरे ही कहने पर बम्बई में बांद्रा में एक बंगला भी खरीद लिया है।'

'सच···!!'

'हां शोभना···अब हम लोग निरन्तर बम्बई ही में रहा करेंगे और वहीं पर पद्मिनी को किसी अच्छे से स्कूल में दाखिल करवा देंगे।'

शोभना ने खुश होकर मुन्नी को सीने से लगा लिया।

सेठ साहब जल्दी-से तैयार होकर अपने कमरे से निकले और कोने-से छड़ी उठाकर हाल में आए···फिर ऊपर की ओर देखकर जोर से बोले—

'पद्मिनी···ऐ पद्मिनी !'

'जी—बाबूजी !'

'भई जल्दी करो···नाश्ता भी करना है और तुम्हें ठीक समय पर स्कूल भी पहुंचना है।'

'जी—आ रही हूं···बाबूजी।'

सेठ जी ने नैकटाई की गाँठ ठीक करते हुए देखा तो मुन्नी बालकनी से सीढ़ियों की ओर आती दिखाई दी—उसके बदन पर स्कूल-यूनिफार्म थी और शोभना का हाथ उसके कंधे पर रखा हुआ था। सेठ साहब के होंठों पर मुस्कराहट फैल गई। मुन्नी शोभना को लेकर नीचे उतरने लगी तो सेठ साहब ने मुस्कराकर कहा—

'हम तो पहले ही समझ गए थे कि मां की ही सेवा में बेटी देर लगा रही होगी।

'अब मैं क्या करूं ?' शोभना मुन्नी के साहरे संभल-संभलकर सीढ़ियां उतरती हुई बोलीं, इस पगली को तो इतना समझाती हूं कि घर में चार-चार नौकरानियां हैं···यह काम नौकरानियों को करने दिया करे लेकिन यह मानती ही नहीं—जब तक स्कूल

चली नहीं जाती मुझे छड़ी को हाथ तक नहीं लगाने देती।'

'बहुत भाग्यवाली होती हैं वह मांयें जिन्हें ऐसी बेटियां मिलती हैं।' सेठ साहब ने बड़े स्नेह से मुन्नी को देखते हुए कहा।

थोड़ी देर में वह डाइनिंग टेबल पर बैठे ग्रौर मुन्नी शोभना के पास बैठी ग्रपने हाथों से उसे नाश्ता करा रही थी···नाश्ता कर चुकने के बाद उसने शोभना को सहारा देकर उठाया ग्रौर बाहर लाकर कोने में रखी छड़ी उसे थमाते हुए बोली—'ग्रौर मां देखो···दोपहर का खाना पेट भर कर खाना!'

'ग्रच्छा बेटा···।'

'ग्रौर हां देखो···ग्रगर ऊपर जाना हो तो ग्रकेली मत जाना।'

'नहीं जाऊंगी बेटी···।'

'ग्रौर ग्रगर बाहर लॉन में ग्राना तो किसी के साथ ग्राना।'

'ग्रच्छा बेटी···ग्रच्छा।' शोभना ने हंस कर कहा, 'तू तो मुझे बिल्कुल बच्ची ही समझती है।'

'मुन्नी ने पंजों पर खड़ा होकर शोभना के माथे पर प्यार दिया ग्रौर पुस्तकें संभालकर सेठ साहब के साथ बाहर ग्रा गई।

शोभना के होंठों पर एक ममता भरी मुस्कराहट खेलने लगी।

सेठ साहब की कार स्कूल के फाटक पर रुक गयी। मुन्नी ने जल्दी से पुस्तकें संभाली ग्रौर सेठ साहब से बोली—

'अच्छा बाबूजी···मैं जाती हूं।'

'जाग्रो बेटी···!' सेठ साहब ने मुन्नी के सिर पर हाथ फेरा।

मुन्नी दरवाजा खोलकर कार से उतरी और फाटक की ग्रोर बढ़ती हुई हाथ हिलाकर बोली—

'टा टा···बाबूजी।' 'टा टा···बेटी···।' सेठ साहब ने कहा, 'बेटी···मैं ठीक पांच बजे कार लेकर यहीं मिलूंगा।'

'ग्रच्छा बाबूजी।'

मुन्नी पलटकर भागती हुई अंदर चली गई और सेठ साहब स्नेह भरी ग्रांखों से उसे जाते देखते रहे।

पद्मिनी दौड़कर फाटक से बाहर आई तो सेठ साहब ने जल्दी से दरवाजा खोल दिया और मुस्कराकर बोले—

'हाय···बेटी!'

'हाय···डैडी।' पद्मिनी ने खुशी से हाथ हिलाया।

पद्मिनी दौड़ती हुई कार के पास ग्राई ग्रौर किताबें सीट पर फेंककर वह सेठ साहब की गर्दन में बांहें डालकर झूल गई। दरवाजा बंद हो गया ग्रौर कार चल पड़ी···सेठ साहब हंसकर पद्मिनी की पीठ ठोंक रहे थे और पद्मिनी कह रही थी—

'एक बात कहूं डैडी?'

'हां बेटी···कहो।'

'मेरे क्लासमेंट मेरी हंसी उड़ाते है।'

'क्यों बेटी···किस बात की हंसी उड़ाते हैं?' सेठ साहब ने आश्चर्य से पूछा—

'कहते हैं इतने बड़े सेठ की लड़की हो कर भी उसके पास ग्रपनी कार नहीं···हर रोज डैडी की कार में ग्राती है ग्रौर उन्हीं की कार में जाती है।'

'बस···इतनी सी बात?' सेठ साहब ने उसकी पीठ थपकर कहा, 'हम अपनी बेटी को कल ही कार लेकर दे देंगे—ग्रौर वह भी बिल्कुल नई, सीधी शो रूम से निकली हुई।'
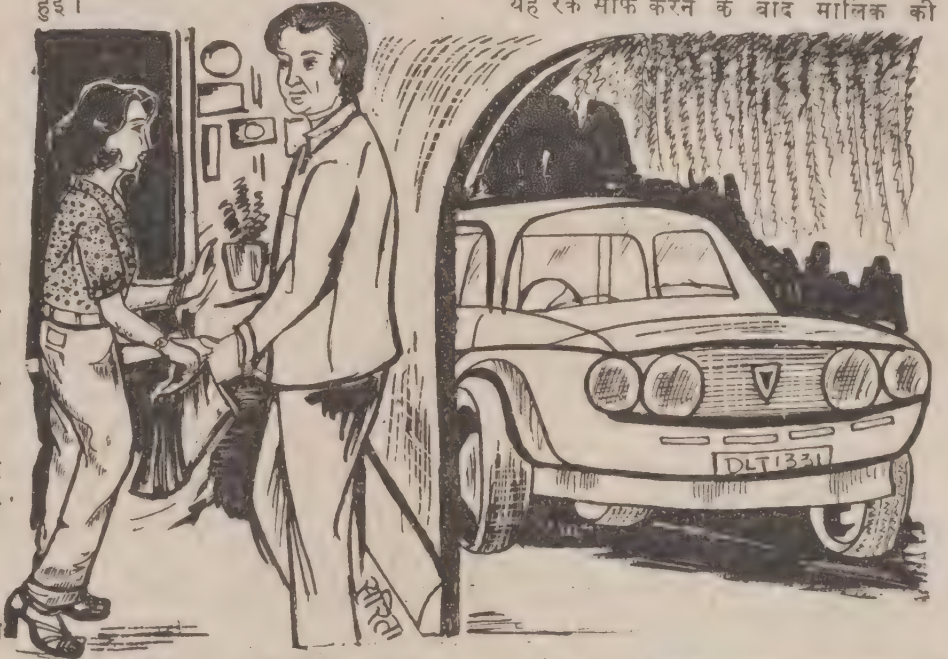
'ग्रो डैडी···' पद्मिनी ने खुशी से सेठ साहब के माथे पर प्यार करके कहा, कितने अच्छे हैं···मेरे डैडी।'

'मेरी बेटी भी तो कितनी प्यारी है।' सेठ साहब ने पद्मिनी को लिपटाकर कहा, 'स्कूल से लेकर कॉलिज तक हर क्लास में सदा फर्स्ट ही तो ग्राई है—।'

'ग्रौर डैडी—।' पद्मिनी खुशी से ग्रांखें चमकाकर बोली, 'मैं ग्रब खेलों में भी तो फर्स्ट ग्राती हूं···।'

'ग्ररे तुम हमारी बेटी हो···हमारी बेटी।'

पद्मिनी सेठ साहब के सीने से लगी बैठी रही ग्रौर गाड़ी सड़क पर फर्राटे भरती रही। थोड़ी देर बाद गाड़ी सेठ साहब के शानदार बंगले के कम्पाउंड में दाखिल हुई ग्रौर पोर्टिको में रुक गई। ड्राईवर ने जल्दी-से उतरकर दरवाजा खोल दिया। सेठ साहब बैग उठाकर उतरने लगे तो पद्मिनी ने उनके हाथ से बैग लेकर कहा—

'नहीं डैडी···मैं बैग उठाए लेती हूं।'

'ग्ररे···तुम अपनी किताबें उठाग्रोगी या बैग?'

'दोनों उठाऊंगी डैडी।' पद्मिनी ने बैग ग्रौर किताबें संभालते हुए कहा, 'मैं ग्रापका बेटा हूं—बेटी थोड़े ही हूं।'

फिर पद्मिनी बैग ग्रौर किताबें लेकर दौड़ती हुई अंदर चली गई···उसके पीछे-पीछे स्नेह से मुस्कराते हुए सेठ साहब भी प्रविष्ट हुए तो उन्होंने देखा शोभना छड़ी टेके एक ग्रोर खड़ी हुई एक बड़े रैक की सफाई करा रही थी।

'देख···एक-एक पुस्तक झाड़कर रखना··· भला कब से सफाई नहीं की तुम लोगों ने··· मैं जब तक काम को न कहूं तुम लोगों के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती···ग्रौर देखो यह रैक साफ करने के बाद मालिक की तस्वीर पर से धूल झाड़ना···एक महीने से ग्रधिक हो गया साफ किए हुए।'

'जी—ग्रच्छा मालकिन।'

एकाएक पद्मिनी ने वहां पहुंचकर उनके हाथ से छड़ी छीन ली ग्रौर शोभना हवा में हाथ हिलाती हुई पद्मिनी की ओर मुड़ी··· उनका हाथ सोफे से टकराया ग्रौर वह सोफे का सहारा लेकर मुस्कराती हुई स्नेह से बोलीं—

'मैं समझ गई···मेरी पद्मिनी बेटी ग्रा गई।'

'ग्रो···मां!' पद्मिनी मां के पास ग्रा कर सोफे पर छड़ी डालती हुई शिकायत भरे स्वर में बोली, 'यह तुम क्या कर रही थीं मां?'

'वह···वह···बेटी···मैं जरा···।'

'सफाई करा रही थी।' पद्मिनी ने वाक्य पूरा करते हुए कहा।

'हां बेटी···।

'मैं जरा परीक्षा में उलझ गई थी मां ···इसलिए महीने भर से इधर ध्यान नहीं

दे सकी···लेकिन तुमसे किसने कहा था कि तुम कष्ट करो ।'

'अरे बेटी···मैं बैठी-बैठी भी तो थक जाती हूं ।

'तो जब मैं आ जाया करूं तो थकान उतार लिया करो ।'

फिर वह शोभना का हाथ अपने कंधे पर रखकर बोली—

चलो मां, 'अब तुम बैठो चलकर ।'

'अरे बेटी···यह तस्वीर ।'

'मां···वह डैडी की तस्वीर है···मैं इसकी सफाई कर लूंगी···तुम चलो बैठो···' फिर वह जोर से चिल्लाई—'अरी ओ कजरी ।'

'आई···छोटी मालकिन ।' कजरी दौड़ती हुई आई ।

'पांच बज चुके—तूने चाय का प्रबन्ध कर लिया?'

'हां छोटी मालकिन···बस अभी लाई ।'

'जल्दी से ले आ···तब तक कपड़े बदलकर आती हूं' फिर वह शोभना से बोली, 'और मां देखो···मेरे यहां आने से पहले उठना नहीं···फिर मैं तुम्हें बाग में घुमाने ले चलूंगी ।'

'बेटी···तू अभी कालिज से आई है—कुछ देर आराम कर ले ना ।'

मां! तुम्हारी सेवा से बड़ा आराम मेरे लिए और क्या हो सकता है ।'

यह कहकर पद्मिनी दौड़ती एक-एक छलांग में दो-दो सीढ़ियां चढ़ती हुई ऊपर चली गई और शोभना के चेहरे पर स्नेह और ममता का प्रकाश-सा फैल गया···सेठ साहब भी प्यार से उसको ऊपर जाते देख रहे थे··· फिर सेठ साहब ठंडी सांस लेकर शोभना से बोले—

'सच हमने पिछले जन्म में कोई बड़ा पुण्य किया है जिसका फल हमें पद्मिनी के रूप में इस जन्म में मिला है ।'

'मुझे तो बिल्कुल ही बिठा के रख दिया है इस लड़की ने···' शोभना प्यार से बोलीं, 'जब कॉलिज चली जाती है तो सब कुछ खाली-खाली-सा लगने लगता है—छड़ी हाथ में होते हुए भी यूं अनुभव होता है जैसे छड़ी कहीं गयी हो— जब कालिज से लौट आती है तो लगता है भगवान ने मेरी आंखें मुझे लौटा दी हैं ।'

सेठ साहब, शोभना और पद्मिनी बाग में टहल रहे थे···पद्मिनी के कंधों पर शोभना का हाथ था। शोभना और सेठ साहब कुछ चुप-चुप थे···लेकिन पद्मिनी बड़ी चहक-कर बोल रही थी···अचानक उसे सेठजी और शोभना के मौन का एहसास हुआ और वह दोनों के चेहरों को ध्यानपूर्वक देखती हुई बोली—

'यह क्या···? डैडी, मम्मी···इतनी देर से मैं बक-बक कर रही हूं और आप लोग कुछ बोलते ही नहीं···।

'ऐं···। शोभना चौंक पड़ी, 'नहीं, कुछ भी नहीं बेटी···।'

'डैडी···।' पद्मिनी ने तेज स्वर में कहा, 'आप बताइये डैडी, क्या बात है ?'

'नहीं बेटी—कोई विशेष बात नहीं ।'

'इसका मतलब है अब आप लोग मुझसे झूठ भी बोलने लगे हैं ।' पद्मिनी ने कुछ रोष जताते हुए कहा—

'नहीं—यह बात नहीं बेटी ।'

'फिर बताइए ना···।' पद्मिनी ने ठुनककर कहा ।

'बेटी···।' शोभना ने ठंडी सांस लेकर कहा, 'हम कभी-कभी यह सोचकर उदास हो जाते हैं कि तूने हमें प्यार में ऐसा बांध लिया है कि हम सोचते हैं कि जब तू ससुराल चली जाएगी तो हमारा क्या होगा ?'

'मां···।' पद्मिनी ने रोष प्रगट करते हुए कहा ।

'बेटी···।' सेठ साहब गम्भीर होकर बोले, 'बेटी तो पराई अमानत होती है··· और अब तू जवान हो चुकी है···बी॰ काम॰ की परीक्षा भी दे चुकी है—कई घरों से तेरे रिश्ते आ रहे हैं—एक लड़का हमने पसंद भी कर लिया है···।'

'डैडी···।'

'बेटी···लड़का बहुत सुन्दर है···और अमरीका से इंजीनियर बनकर लौट रहा है—उसका बाप प्लास्टिक के खिलौनों के एक बहुत बड़े कारखाने का मालिक है ।'

'डैडी···।' पद्मिनी ने गुस्से से कहा, 'मेरी बात कान खोलकर सुन लीजिए··· मैंने बी॰कॉम॰ इसलिए नहीं किया कि फिर कॉलिज की सूरत न देखूं···मैंने कामर्स इसलिए पसंद की थी कि मैं इसी विषय में एम॰ कॉम॰ भी करना चाहती थी—एम॰ कॉम॰ करने के बाद मैं आपको घर में बिठा दूंगी और सारा कारखाने का काम-काज स्वयं संभालूंगी ।'

'लेकिन बेटी···'

'डैडी···आप ही तो कहा करते हैं कि मैं आपकी बेटी नहीं···बेटा हूं···और बेटों को क्या माता-पिता घर से निकालने की बात सोचते हैं ? कान खोलकर सुन लीजिए डैडी···मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगी···कभी नहीं जाऊंगी ।'

पद्मिनी का स्वर इतना दृढ़ और निर्णयात्मक था कि शोभना और सेठ साहब सन्नाटे में रह गए ।

बैडरूम में हल्की नीली रोशनी फैली हुई थी और सेठ साहब तकिये पर सिर रखे लेटे छत की ओर ताक रहे थे···नींद उनकी आंखों से कोसों दूर थी···अचानक शोभना ने उनकी ओर करवट बदली और बोली—

'क्या सो गए?'

'ऐं···नहीं तो—'सेठ साहब चौंककर बोले, 'तुम भी जाग रही हो अब तक ?'

'हां—मुझे नींद नहीं आ ।'

'नींद तो मुझे भी बिल्कुल नहीं आ रही ।'

'तो क्या आप भी पद्मिनी ही के बारे में सोच रहे हैं ?'

'हां—शोभना···उसी के बारे में सोच रहा हूं । आज की पढ़ी-लिखी लड़कियों की चटक-मटक देखकर लड़के वाले बिदक जाते हैं लेकिन पद्मिनी हमारे जानने वालों में इतनी लोकप्रिय है कि जिस सेठ का भी लड़का जवान है वह पद्मिनी को अपनी बहू बनाने के लिए बेचैन है—मेरे पास हफ्ते में दो चार रिश्ते तो आ ही जाते हैं···मुझे इन सबमें वह लड़का महेन्द्र पसंद है जो अमरीका से इन्जीनियर बनकर लौटने वाला है, लेकिन पद्मिनी की बातों से लगता है कि वह शादी के लिए सहमत नहीं होगी ।'
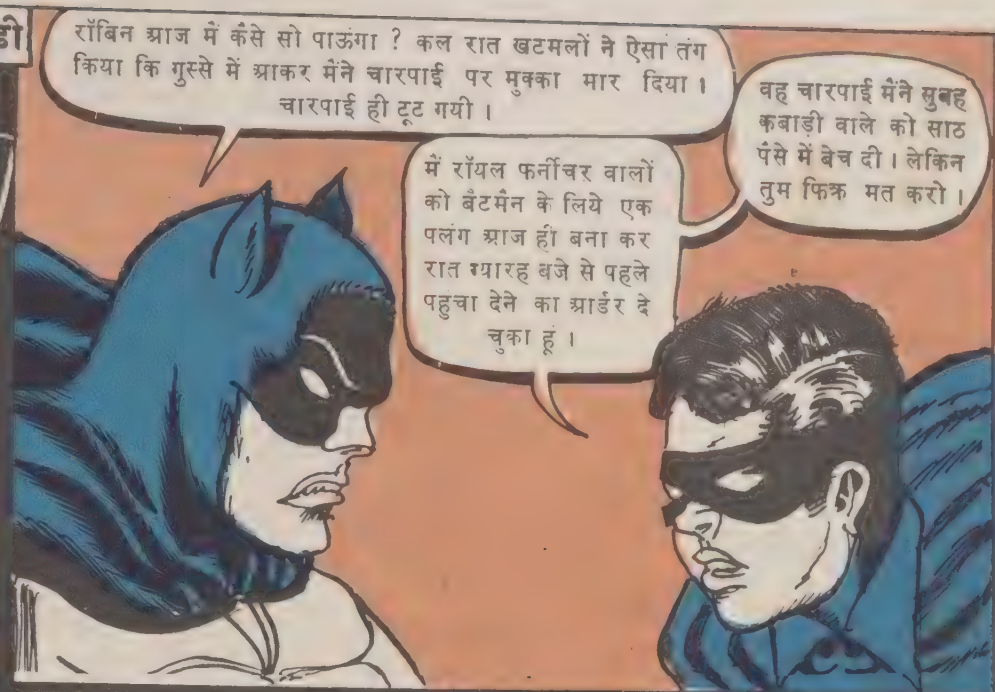
शेष आगामी अंक में

बैटमैन की दीवाना पैरोडी
BAD MAN
बैडमैन
रॉबिन आज मैं कैसे सो पाऊंगा ? कल रात खटमलों ने ऐसा तंग किया कि गुस्से में आकर मैंने चारपाई पर मुक्का मार दिया। चारपाई ही टूट गयी।
वह चारपाई मैंने सुबह कबाड़ी वाले को साठ पैसे में बेच दी। लेकिन तुम फिक्र मत करो।
मैं रॉयल फर्नीचर वालों को बैटमैन के लिये एक पलंग आज ही बना कर रात ग्यारह बजे से पहले पहुचा देने का आर्डर दे चुका हूं।
बैटमैन रात को तुम बेकार कहां मुझ से चक्कर लगवा रहे हो ? क्या पार्क में हम दो युगल गान गायेंगे ? मुझे परीक्षा की तैयारी भी करनी है।
परीक्षा की तुम फिक्र न करो, हम प्रैस से पर्चे उड़ा लेंगे। कोई काम हो या न हो सुपर मैनों को यह कला बाजियां जरूर खानी चाहियें।
वरना लोग यह समझेंगे कि हमारे पंखों को जंग लग गया है।
यह पलंग बनाया तुमने मेरे लिये ? इस पर मैं कैसे सोऊँगा ? यह कोई मजाक है ?
ओ बैटमैन दे पुत्तरा,हमने तो यही सोचा तुम बैटमैन हो तो सोते भी बैट यानि चमगादड़ की तरह होगे। जैसे वह पेड़ों पर उल्टा लटकता है। हमने खड़े स्टैंड पर एक डंडा लगा दिया तुम्हारे उल्टे लटकने के लिये। सान्नु की पता सी···
खैर कोई गल नहीं, तुमको यह नहीं चाहिये तो हम इसे सुपरमैन बन्दर या सुपरमैन उल्लू को दे देंगे। वह इस डंडे पर बैठ सकते हैं। हमारे पास ग्राहकों की कमी नहीं है।
ROYAL FURNITURE

जी हां, यह रहा टेप रिकार्डर। यह तोता जो कुछ सुनता है हूबहू बाद में वही दोहरा देता है। मैं इसकी पूंछ को दबाऊंगा और यह आपका दिया कल का बयान दोहरा देगा।

मेरा दिल करता है इस तोते के बच्चे का गला दबा दूं मुझे इसने चरण सिंह बना कर रख दिया।
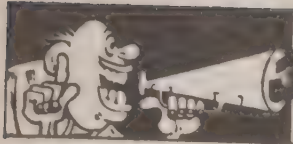
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

सन्जु मंदिरता —राजौरी गार्डन, दिल्ली : चाचाजी, दिल सबके पास होता है, और दिल अगर एक मन्दिर है, तो लोग मन्दिर क्यों जाते हैं ?

उ० : दोनों मन्दिरों में 'चढ़ावे' का फर्क देखने के लिये ।

केवल प्रकाश दुआ —काशीपुर : हमारी आने वाली पीढ़ी हमारी प्रशंसा किस प्रकार करेगी ?

उ० : कहेगी, हमारे पूर्वज ऐसे थे कि गंगा में नहाये तो गंगा अपवित्र हो गई ।

मो० जहांगीर —रांची : चाचाजी, लकड़ी जलती है तो धुंआ उठता दिखाई देता है। दिल जलता है तो...?

उ० : लकड़ी जलती है तो तेल भी निकलता है, जो दिखाई कम देता है । दिल जलता है तो धुंआ दिखाई नहीं देता। आंखों से निकलता तेल ही दिखाई देता है ।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : मैं आपको एक बोतल रम भेजूं तो बदले में हमें आप क्या देंगे ?

उ० : राम नाम के सिवाय हमारे पास और क्या रखा है बदले में देने के लिये । रम की बोतल आप मोरारजीदेसाई को भेजिये । बदले में वही आपको 'वह' भेज देंगे, जो वह खुद पीते हैं ।

रवि भाटिया—शंकर रोड मार्किट : लोग आने वाले कल की परवाह क्यों नहीं करते ?

उ० : परवाह करने से बनता भी क्या है। लोग सोचते हैं, जितनी देर हम कल के बारे में सोचेंगे, उतनी देर में आज कोई हमारे सामने से खीर का कटोरा उठा कर खा जायेगा ।

पंडित मेवालाल परदेसी—महोबा : हमारी चाची जी, अधिक किन्हें चाहती हैं, नेताओं को या अभिनेताओं को ?

उ० : इसका फैसला तो आप खुद ही कर सकते हैं, आजकल नेता और अभिनेता में अंतर ही कितना रह गया है ।

गुरुमेज सिंह राजपाल—झरिया : चाचाजी, सच्चा सुख कब मिलता है ?

उ० : शायद स्वर्ग सिधारने के बाद भी नहीं। गांधीजी की समाधि पर पिछले दिनों जो कुछ हुआ वह आपने देख ही लिया । जब जयप्रकाश नारायण की समाधि पर जूते चलेंगे वह दिन भी आप जल्दी ही देख लेंगे।

एम० कमाल, 'राज'—शिलांग (मेघालय) : दूसरों को उन्नति करता देख कर लोग जलते क्यों हैं ?

उ० : क्योंकि इस प्रकार जलने में पल्ले की एक माचिस की तीली भी नहीं लगती ।

अमित अग्रवाल—देवली : सुना है गंजे अधिक अकल वाले होते हैं, आपकी इस बारे में क्या राय है ?

उ० : दूधों नहाओ, पूतों फलो अग्रवाल जी। सच्ची बात कहकर आपने हमें अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने से बचा लिया ।

कुंवर प्रेम सिंह चौहान—नागौर : यह चर्चा बड़े जोरों पर है कि १९८० में प्रलय होने वाली है । इसके बारे में आपका क्या विचार है ?

उ० : जैसे हालात आजकल चल रहे हैं, उस हिसाब से तो १९८० में भी प्रलय देर से ही आ रहा है ।

"मेरी अंतिम इच्छा है कि देश भर में एक सप्ताह तक कोई भी रेल दुर्घटना न हो।"

लालचन्द सचदेव—इन्दौर : फिल्म स्टारों की नेशनल पार्टी की सफलता या असफलता के संबंध में आपके क्या विचार हैं ।

उ० : नेशनल की सीधी टक्कर लोकदल से नजर आ रही है और फिल्म स्टार आई. एस. जोहर की बातों से नजर आता है कि वह फिल्मी जोकर राज नारायण को तरावड़ी के घाट पानी पिला-पिलाकर मारने से पहले दम नहीं लेंगे । और जिन ग्राम सभाओं में जीनत अमान की पतली कमर होगी, रेखा की कातिल नजरें होंगी और शबाना आजमी की लहराती जुल्फें होंगी । वहां राजनारायण की दाढ़ी के बालों को कोई मंजू की झाड़ू या नारियल के छिल्के के बराबर भी नम्बर नहीं देगा । राजनारायण लोगों को गंगा जल से पवित्र करते हैं और उन पर इतर छिड़कते हैं । उधर आई. एस. जोहर ने ऐलान किया है कि वह राज नारायण पर मिट्टी का तेल छिड़केगा और गऊ मूत्र से स्नान करवा कर उन्हें पवित्र किया जाएगा । और वह गऊ मूत्र फिल्म अभिनेत्रियां गोपियां बनकर और मटकों में भर कर देश के सभी प्रांतों से लायेंगी। इसके बाद राजनारायण के समर्थकों ने कहा है कि वे आई. एस. जौहर के बदन पर गोबर मल कर उसे शुद्ध करेंगे । यह सिलसिला कहां तक चलेगा, यह तो भगवान जाने । पर यह निश्चय है कि गोबर का नाम सुन कर आई. एस. जौहर की अभिनेत्रियां भाग खड़ी होने के लिये तैयार हो गई होंगी । इसके इलावा एक और मुश्किल यह है कि राज नारायण जैसा 'ग्रेट आदमी' जो न कर गुजरे वह कम है । अभी तो बात गाय के गोबर तक सीमित है । राजनारायण को और भी बहुत से जानवरों को 'उपयोग' में लाना आता है ।

टिंकू मोंगा—मोंगा : पैसा हाथ का मैल है, फिर भी लोग इसे तिजौरी में बन्द करके क्यों रखना चाहते हैं ?

उ० : इस डर से कि कहीं ऐसा न हो कि पैसा खुद तो चला जाये और मैल साफ करने वाले किसी 'क्लीनर' को भेज दे । आमतौर पर ऐसा होता है कि डेढ़ रुपया गया और साबुन की एक टिक्की आ गई । फिर जब साबुन से हाथ साफ किये तो पता लगा कि पैसा गया । पैसा तो हाथ का मैल था ।

मदन किशोर होतवानी—रायपुर : चाचा जी, आपकी नजरों में जिन्दगी क्या है ?

उ० : मरते मरते जी रहे हैं, और यही इक आस है ।
जिन्दगी बाकी रही जो हर तरहबकवास है ।।

हंसराज नागपाल—रुद्रपुर, नैनीताल : मनुष्य को पेट भरने के लिए झूठ बोलना पड़े तो क्या उस झूठ का भी पाप लगता है ?

उ० : आजकल दूसरों का पेट काटने, दूसरों की थाली को ठोकर मारने वालों को पाप नहीं लगता, आप एक सच्चाई के लिय बोले गए झूठ की बात करते हैं ।

अशोक जौहर, 'गगन'—देहरादून : जनता पार्टी वाले पता नहीं किस-किस की खुशियों को अपने साथ ले डूबे और अपने साथ किसे ले डूबेंगे ?

उ० : आपके गमों को ।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

लोक सभा के मध्यावधि चुनाव होने वाले हैं। सारी पार्टियों तथा नेता-वर्कर लोगों के पास वोट मांगने जायेंगे। कई तरह के नारे गढ़े जायेंगे और सब्ज बाग दिखाकर वोट बटोरने की कोशिशें की जायेंगी। चुनाव के नारे व बातें प्रायः एक जैसी ही रहती हैं। नेता लोग पिटी पिटाई बातें लेकर आपके पास आयेंगे तो आपको उनकी बातों का क्या दीवाना जवाब देना चाहिए इस फीचर में हम वही बता रहे हैं।

आजमाइये और मजा लीजिये।

क्यों गुरु, एक ही बार में सारा माल साफ करने की स्कीम बना रखी है?

मैं यह इलेक्शन कुर्सी के लिये नहीं लड़ रहा हूं।

यह तो निहायत बेवकूफी है। मैं ऐसे बेवकूफ को अपना वोट कैसे दूं?

ऐसा न करना मेरे यार। गरीबी ही तो एक चीज है जो चारों तरफ नजर आती है। इसका भी स्टॉक तुमने खत्म कर दिया तो गरीबी ब्लैक मार्केट में मिलने लगेगी।
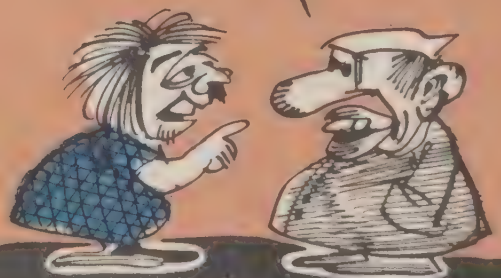
दांत तो तुम्हारे नकली नजर आते हैं।

केवल हमारी पार्टी ही ने पहली बार किसानों की समस्याओं की ओर ध्यान दिया है ।
भाई, आज तक हम चैन से थे। अब तुम्हारी मनहूस नजर पड़ गयी है पता नहीं क्या होगा ?
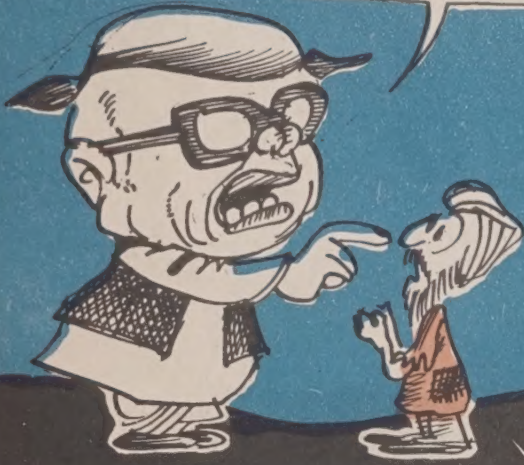
केवल हमारी पार्टी ही स्थायी सरकार बना सकती है ।
गोया आप स्थायी सिर दर्द बनना चाहते हैं ?
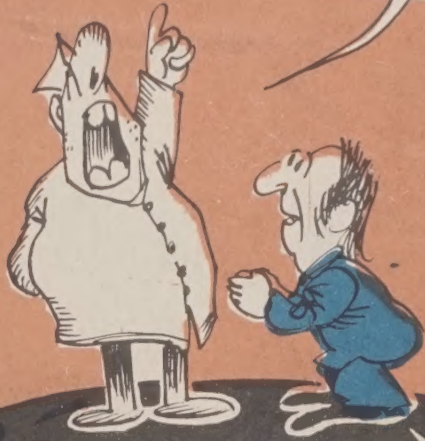
इस संकट की घड़ी में मैं ही देश को बचा सकता हूं ।
चलो, पहले तो यह देखना है कि आप अपनी जमानत भी बचा सकते हैं या नहीं ।

चुनाव में मेरे खिलाफ जो खड़ा है वह चोर, भ्रष्टाचारी, झूठा व लफंगा है ।
श्रीमान जी, बिल्कुल आप पर ही गया है ।

देश को मेरे अनुभव की जरूरत है । अपना वोट मुझे दें ।
और नाना कब्रिस्तान में आपकी जरूरत है ।

मैंने देश की आजादी की लड़ाई में सिर पर लाठियां खाई हैं ।
यार, लाठियां प्रेम से गिरी होंगी वरना आप मुझे आज बोर करने के लिये जिंदा न बचे होते ।

पेड़ के चुनाव चिन्ह पर ही अपनी मोहर लगाइये ।
मियां, पेड़ पर उल्लू बैठा होता तो जरूर लगाता मैं मोहर।

आपने अपने वोट का ठीक इस्तेमाल करना है
ठीक है । मैं वोट में संखिया लपेट कर तुम्हें वह देता हूं उसे खा लेना ।

महंगाई कितनी बढ़ गयी है ? कोई एक चीज है जो सस्ती हुयी हो ?
भाई साहब, ऐसी बात तो नहीं है । कई चीजें बहुत सस्ती हो गयी हैं जैसे खून, धर्म-ईमान, चरित्र, आपके नारे .....
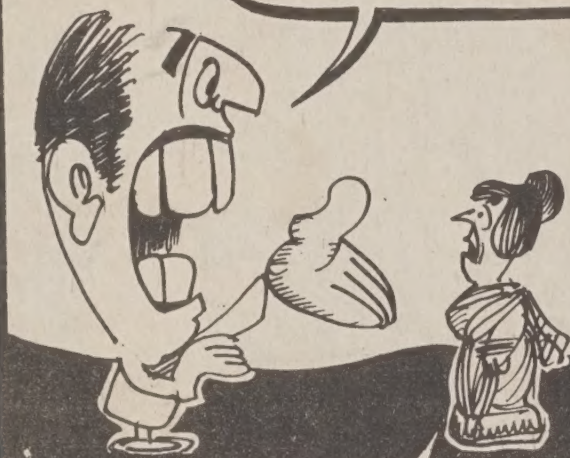
आप दल-बदलू के खिलाफ वोट दें, दल-बदलुओं को सबक सिखाना है ।
आप दल नहीं बदलते तो कोई बात नहीं । कम से कम बनियान तो बदला कीजिए, बदबू आ रही है ।

मैं अमीरों के खिलाफ हूं उनसे पैसे लेकर नहीं लड़ना चाहता ।
चंदा
हजरत, तो क्या आपको डाक्टर ने बताया था कि चुनाव जरूर लड़ना है ?

आपकी सारी समस्याओं का हल हमारी पार्टी के पास है ।
तो उसे अपने पास ही रखिये । यह ध्यान रखना कि उसे हवा न लगने पाये ।

...धर्मानी, राजेश ...तीर्स, बैरन बाजार, (म० प्र०), १४ वर्ष, ...करना, दीवाना ...रों को हसाना ।

महेन्द्र कुमार, टुन्छी गली, (नरदेवी), २३ वर्ष, पत्र मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, उपन्यास पढ़ना, फुटवाल खेलना ।

चन्द्र प्रकाश, २६२३, नेहरू कालोनी, हाथरस (उ० प्र०) १६ वर्ष, गीत सुनना एवं हवाई किले बनाना, मैच सुनना ।

जगदीश रन्जित, शान्ति निकुन्ज मा० वि०, काठमाण्डू (नेपाल) १३ वर्ष, पत्र मित्रता करना, पोस्ट कार्ड सलग्न करना ।

करतार सिंह, ३६६, सोहर पत्ती, बुरहाव पुर (म० प्र०), १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, गाना गाना, हवाई किले बनाना, पत्रिका पढ़ना ।

विजेन्द्रकुमार शर्मा, २०६/६२, पाटनीपुरा, इन्दौर (म० प्र०), २० वर्ष, पुरानी फिल्मों के गीत सुनना, दीवाना पढ़ना तथा शांत रहना ।

पेमानबु हुक्पा, शाम लामा-हक्का, दार्जिलिंग, १० वर्ष, फुटबाल खेलना, अभिनय करना, गाना सुनना, क्रिकेट सुनना ।

...ार, गांधी पथ, ...टना ८००००१, ...क्रिकेट खेलना, डाक ...मा करना, गाना

राकेश पालीवाल, एफ ८२० इन्द्रपुरी, जे० जे० कालोनी, बुद्ध नगर, नई दिल्ली-१६, १७ वर्ष, हंसना हँसाना, लोगों को नचाना, दीवाना पढ़ना ।

श्री कृष्ण जोनी, अध्यक्ष कमल रेडियो, २० वर्ष, पढ़ना, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना व्यायाम करना, हंसाना हंसना तथा गीत गाना ।

सतीश वर्मा, वी० के० दत्त गेट, अमृतसर, १८ वर्ष, फिल्म देखना, कलाकारी करना, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना तथा रेडियो सुनना ।

विद्या कुमार श्रेष्ठ, ६/५६६, थापाथली, काठमाण्डू नेपाल, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता, बैड-मिन्टन खेलना, दोस्ती करना, दीवाना पढ़ना ।

धनपाल "सरोज", ३२१ २, गली नं० २, आनद पर्वत, नई दिल्ली, १७ वर्ष, नावल पढ़ना, घूमना, दीवाना पढ़ना और फिरना-घूमना ।

विजय कुमार गोमी, १३ ८३०, काल्हारा, कुइलेचोर, काठ-मांडो, २० वर्ष, पत्र-मित्रता, स्वीमिंग, टेबुल टेनिस, साहित्य पढ़ना आदि ।

...मी "आशाश्रुति" १८ वर्ष, पत्रमित्र ...टट संकलन, पढ़ना, ...ना, दीवाना पढ़ना,

श्री कृष्ण गम्भीर, २२६, श्याम पार्क, साहिबाबाद, गाजियाबाद, २३ वर्ष, शायरी करना, नावल पढ़ना, ख्वाब देखना, दीवाना पढ़ना ।

रमेश खन्ना, अम्बाला शहर, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, सड़क नापना, दादागीरी करना, वेट-लिफ्टिंग, फिल्म देखना, चाय पीना ।

अचलेश्वर बी. बोहरा बालाराम भवन, ग्रांट रोड, बम्बई, १८ वर्ष, पत्र मित्रता करना, नावल पढ़ना, डाक टिकट संग्रह करना क्रिकेट व कैरम बोर्ड खेलना ।

असलम 'दर्द' द्वारा यश खन्ना 'नीर', अम्बाला शहर, २३ वर्ष, दीवाना पढ़कर दीवानों की तरह घूमकर दूसरे दीवानों से दोस्ती करना ।

राजकुमार गोयल, बेगमबाग, मेरठ, १७ वर्ष, पत्र मित्रता, किताबें पढ़ना, सिगरेट पीना, क्रिकेट खेलना, ख्वाब देखना, दीवाना पढ़ना ।

गौरीशंकर जोशी, २८, राज-बाड़ा चौक, इन्दौर, २० वर्ष, पहलवानी करना, पढ़ना, क्रिकेट खेलना बड़ों का आदर करना ।

...र शर्मा 'साकेत', ...ल्द्वानी, नैनीताल, ...रंज खेलना, डाक ..., खेल की किताबें ...करना ।

बाबु मिया गिलानी, शानंल भवन, लोदी कटरा, पटना, १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दूध पीना, दीवाना पढ़कर दीवाना बनना ।

छगनलाल वर्मा, मारा गांव, रायपुर (म० प्र०), २२ वर्ष, रेडियो सुनना, पत्र मित्रता, गरीबों की सेवा करना, बीड़ी पीना, दीवाना पढ़ना ।

राजिन्द्र कटारिया, वरिन्द्रा बुक डिपो, मिक्खू, १७ वर्ष, दुकान-दारी करना, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना, नावल पढ़ना ।

राकी गुरुवसाणी, रविग्राम तेलीगन्धा, रायपुर, (म. प्र.), १७ वर्ष, पत्रमित्रता करना, दीवाना पढ़कर दीवाना बन जाना, दूध पीना ।

अजय सेठी, म० नं० २, राजन बाबू क्षयरोग अस्पताल किंग्जवे कैम्प देहली-६, १० वर्ष, पत्र मित्रता, टिकट संग्रह करना, दीवाना पढ़ना, दूध पीना ।

नरेन्द्र मोहन जग्गा, किशोर चन्द्र सुभाष चन्द्र, गिदड़बाहा १४८५, दीवाना पढ़ना, फिल्म देखना, उपन्यास पढ़ना और फिल्मों की कहानी सुनना ।

...शर्मा, बैजनाथ ...कसना जानाट, ...बिहार, १६ वर्ष, ...क्रिकेट, विदेश ...पढ़ना ।

अरुण मानन्धर, ५/२२८ झांछे हसाल (नेपाल), १५ वर्ष, बक्सीन खेलना, लड़कियों से प्यार करना व फुटबाल खेलना, पान खाना ।

प्रदीप चावला, ५१/१२, कल-न्दर चौक पानीपत, १५ वर्ष, हरेक दीवाना पढ़ना, टेली-विजन देखना, क्रिकेट खेलना फुटबाल खेलना ।

विरेन्द्रनाथ दुबे, म० नं० जी-२ गोपाल नगर, सहारनपुर (उ० प्र०), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, डाक टिकट संग्रह करना ।

निर्मलराम झा, इताहं टोल, ५/५८४, भक्तपुर, काठमाण्डो नेपाल, २२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना व फिल्मो में काम करना ।

विजय कुमार अग्रवाल, १५ चौक सर्राफा, गया, (बिहार), २१ वर्ष, पत्र-मित्रता, प्यार करके दूसरों का प्यार पाना, दीवाना पढ़ना ।

सुनील कुमार शिवहरे, जवाहर गंज, डबरा, जिला ग्वालियर (म० प्र०), क्रिकेट खेलना, पढ़ना-लिखना, पत्र-मित्रता व घूमना-फिरना ।

...र लिब्री, म० ...गुरदयाल सिंह ...लाइन्स लुधियाना ...देखना, क्रिकेट

अनिल कुमार मिश्रा, कां. नो. आई एम २६, शहरपुरा सिटी, बिहार, १५ वर्ष, दादागिरी करना, फिल्म देखना, चाकू से निशानेबाजी करना ।

नरेन्द्र अरोड़ा, ४८, आर्यनगर, रोहतक, हरियाणा, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, गीत सुनना, शेयर लिखना ।

निर्मल कुमार मुरजी, जेट ट्रेवल एजेन्सीज, ६, दलाल स्ट्रीट फोर्ट (बम्बई), २३ वर्ष, पत्र-मित्रता करना व दीवाना पढ़ना व फिल्में देखना ।

मनोज कुमार जैन, मकान नं० १७१५, गली छत्ता, बड़ौत, २५०६, २० वर्ष, पत्र मित्रता करना, डाक टिकट संग्रह करना आदि ।

...वाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब
...-८ बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______

पता ______

आयु ______ शौक ______

Regd. No. D (D) - 275